Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 50

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

14 दिसम्बर 2017 ई. 25 रबीउल् अव्वल 1439 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

पंजाब और हिन्दुस्तान के लोग मुझ से ऐसे बिगड़ गए थे कि मुझे पैरों के नीचे कुचलना चाहते थे अवश्य था कि वे लोग अपने अनथक प्रयासों में सफल हो जाते और मुझे तबाह कर देते, परन्तु वे सब के सब असफल रहे। मैं जानता हूँ कि उन का इतना कोलाहल करना तथा मुझे तबाह करने के भरसक प्रयत्न तथा यह उत्तेजित तूफान जो मेरे विरोध में पैदा हुआ, यह इसलिए नहीं था कि ख़ुदा ने मुझे तबाह करने का इरादा किया था वरना इसलिए था ताकि ख़ुदा तआला के निशान प्रकट हों और ताकि सामर्थ्यवान ख़ुदा जिसे कोई पराजित नहीं कर सकता, उन लोगों के मुक़ाबले पर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करे तथा अपनी शक्ति का चमत्कार प्रकट करे। अत: उसने ऐसा ही किया।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

100. सौवां निशान - बराहीन अहमदिया की वह भविष्यवाणी है जो उसके पृष्ट 241 (हाशिए) में लिखा है और भविष्यवाणी की इबारत यह है -

لا ئیئس من روح اللہ۔ الآ انَّ روح اللہ قریبٌ الآ انّ نصر اللہ قریب۔ یأتیک من کلّ فجٍّ عمیق۔ یاتون من کل فجٍّ عمیق۔ ینصرک اللہ من عندہٖ۔ ینصرک رحالٌ نوحِی الیھم من السَّمآء۔ ولَا تصعِّر لخلق اللہ ولا تسئم من النَّاس

देखिए पृष्ठ 241 (हाशिया) बराहीन अहमदिया प्रकाशित 1881, 1882 ई. मुद्रक सफ़ीर हिन्द प्रेस अमृतसर।

(अनुवाद) ख़ुदा की कृपा से निराश मत हो और यह बात सुन रख कि ख़ुदा की कृपा निकट है। सावधान! कि ख़ुदा की सहायता निकट है। वह सहायता तुझे प्रत्येक मार्ग से पहुँचेगी और प्रत्येक मार्ग से लोग तेरे पास आऐंगे इतनी अधिक संख्या में आऐंगे कि वे मार्ग जिन पर वे चलेंगे गहरे हो जाएंगे, ख़ुदा अपने पास से तेरी सहायता करेगा, तेरी सहायता वे लोग करेंगे जिनके हृदयों में हम स्वयं इल्क़ा करेंगे, किन्तु चाहिए कि तू ख़ुदा के बन्दों से जो तेरे पास आऐंगे दु:शीलता न करे और चाहिए कि तू उनका आधिक्य देख कर उनके भेंट करने से थक न जाए।

इस भविष्यवाणी पर आज पच्चीस वर्ष हो गए, जब यह बराहीन अहमदिया में प्रकाशित हुई थी और यह उस युग की भविष्यवाणी है जबकि मैं एक अज्ञात कोने में पड़ा था तथा उनमें से जो आज मेरे साथ हैं मुझे कोई भी नहीं जानता था तथा मैं उन लोगों में से नहीं था जिन की किसी प्रतिष्ठा के कारण संसार में चर्चा की जाती है। निष्कर्ष यह कि कुछ भी नहीं था और मैं लोगों में से मात्र एक सामान्य व्यक्ति था और मैं अज्ञात था और एक व्यक्ति भी मुझ से संबंध नहीं रखता था किन्तु कुछ एक-दो लोग जो मेरे खानदान से पूर्व से ही परिचय रखते थे। यह वह घटना है कि क़ादियान निवासियों में से कोई भी व्यक्ति इस के विपरीत साक्ष्य नहीं दे सकता। तत्पश्चात ख़ुदा तआला ने इस भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए अपने बन्दों को मेरी ओर आकृष्ट किया और समूह के समूह क़ादियान में आए और आ रहे हैं तथा नक़द और वस्तुओं के रूप में हर प्रकार के उपहार लोगों ने इतनी प्रचुर मात्रा में दिए और दे रहे हैं जिन की मैं गणना नहीं कर सकता और यद्यपि कि मौलवियों की ओर से बाधाऐं डाली गईं, और उन्होंने एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाया कि लोग न आऐं, यहां तक कि मक्का तक से भी फ़त्वे मंगवाए गए तथा लगभग दो सौ मौलवियों ने मुझ पर कुफ्र के फ़त्वे दिए वरना वध योग्य होने के भी फ़त्वे प्रकाशित किए गए परन्तु वे अपने समस्त प्रयासों में असफल रहे और परिणाम यह हुआ कि मेरी जमाअत पंजाब के समस्त शहरों तथा देहात में फैल गई और हिन्दुस्तान में भी अनेकों स्थानों में बीजारोपण हो गया वरन् यूरोप और अमरीका के कुछ अंग्रेज़ भी मुसलमान होकर इस जमाअत में सम्मिलित हुए तथा लोगों के समूह के समूह क़ादियान में आए कि यक्कों की अधिकता से कई स्थानों से क़ादियान की सड़क टूट गई। इस भविष्यवाणी पर ध्यानपूर्वक विचार करना चाहिए कि यदि यह भविष्यवाणी ख़ुदा की ओर से न होती तो यह विरोध का तूफान जो उठा था तथा समस्त पंजाब और हिन्दुस्तान के लोग मुझ से ऐसे बिगड़ गए थे कि मुझे पैरों के नीचे कुचलना चाहते थे अवश्य था कि वे लोग अपने अनथक प्रयासों में सफल हो जाते और मुझे तबाह कर देते, परन्तु वे सब के सब असफल रहे। मैं जानता हूँ कि उन का इतना कोलाहल करना तथा मुझे तबाह करने के भरसक प्रयत्न तथा यह उत्तेजित तूफान जो मेरे विरोध में पैदा हुआ, यह इसलिए नहीं था कि ख़ुदा ने मुझे तबाह करने का इरादा किया था वरना इसलिए था ताकि ख़ुदा तआला के निशान प्रकट हों और ताकि सामर्थ्यवान ख़ुदा जिसे कोई पराजित नहीं कर सकता, उन लोगों के मुक़ाबले पर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करे तथा अपनी शक्ति का चमत्कार प्रकट करे। अत: उसने ऐसा ही किया। कौन जानता था और किस के ज्ञान में यह बात थी कि जब मैं एक छोटे से बीज की भांति बोया गया, इस के बाद हज़ारों पैरों के नीचे कुचला गया तथा आंधियाँ चलीं, तूफान आए, विद्रोह का शोर एक बाढ़ के समान मेरे इस छोटे से बीज पर फिर गया। मैं फिर भी इन आघातों से बच जाऊँगा। अत: वह बीज ख़ुदा की कृपा से नष्ट नहीं हुआ वरना बढ़ा और फूला और आज वह एक बड़ा वृक्ष है जिसकी छाया के नीचे तीन लाख मनुष्य आराम कर रहे हैं। ये ख़ुदा के कार्य हैं, मानव शक्तियाँ जिनको समझने से असमर्थ हैं। वह किसी से पराजित नहीं हो सकता। हे लोगो! कभी तो ख़ुदा से शर्म करो! क्या इसका उदाहरण किसी झूठ घड़ने वाले के आचरणों में प्रस्तुत कर सकते हो? यदि यह कारोबार मनुष्य का होता तो कुछ भी आवश्यकता न थी कि तुम विरोध करते और मुझे मारने के लिए इतना कष्ट उठाते अपितु मुझे मारने के लिए ख़ुदा ही पर्याप्त था। जब देश में ताऊन फैली तो कई लोगों ने दावा करके कहा कि यह व्यक्ति ताऊन से मारा जाएगा परन्तु ख़ुदा की विचित्र क़ुदरत है कि वे सब लोग स्वयं ही ताऊन से तबाह हो गए तथा ख़ुदा ने मुझे सम्बोधित करके कहा कि मैं तेरी रक्षा करूँगा और ताऊन तेरे निकट नहीं आएगी अपितु मुझ से यह भी कहा कि मैं लोगों को यह कहूँ कि अग्नि से (ताऊन से) हमें मत डराओ। 'अग्नि हमारी ग़ुलाम अपितु ग़ुलामों की ग़ुलाम है'। तथा पुन: कहा कि मैं तेरे इस घी की रक्षा करूँगा और प्रत्येक जो इस चारदीवारी के अन्दर है वह ताऊन से बचा रहेगा। अत: ऐसा ही हुआ। इस क्षेत्र में सब को ज्ञात है कि ताऊन के आक्रमण से गाँव के गाँव नष्ट हो गए और हमारे आस पास प्रलय का नमूना रहा परन्तु ख़ुदा ने हमें सुरक्षित रखा।

(हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ 115 -118, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 22, पृष्ठ 261)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का दौरा जर्मनी, अगस्त 2017 ई. (भाग -5)

☆ जो यह कहता है कि इस्लाम ने एक पुरुष को महिला पर प्राथमिकता दी है, वह ग़लत कहता है, घर का खर्च चलाना बीवी बच्चों के खर्च का ख्याल रखना उन की जरूरतों का ख्याल रखना मर्द का काम है।

जब मर्द की यह ज़िम्मेदारी है कि वह अपनी पत्नी तथा बच्चों की सभी जरूरतों को पूरा करे, तो महिला को अपनी पहली प्राथमिकता घर की देखभाल और बच्चों के प्रशिक्षण की तरफ रखनी चाहिए।

यदि बच्चों को प्रशिक्षण देने की ज़िम्मेदारी एक महिला अदा करती है, तो कहां से यह परिणाम निकला कि उसे घर में रखते हुए, उसके अधिकार छीन लिए गए हैं।

अल्लाह तआला ने महिला की प्रकृति में यह रखा है कि वह बच्चों की देखभाल सबसे अच्छे रूप में करने में सक्षम है।
अगर महिला भी यह कहे कि मैंने अपने अधिकार का उपयोग करना है और घर से बाहर रहना है तो बच्चों को अधिकार कौन देगा?
अहमदी माताओं की पवित्र गोदें मुक्त पवित्र ख़ज़ाने हैं और ख़ाज़ाने रखने के स्थान हैं उनमें पलने वाले बच्चे पवित्र माल हैं और नेक प्रशिक्षण की वजह से अल्लाह तआला के पसंदीदा माल हैं अतः कौन, जो पवित्र माल बनाना और लेने की कोशिश नहीं करेगा अतः उठें और पवित्र माल से अपने ख़जाने भरती चली जाएं।

जलसा सालाना जर्मनी के दूसरे दिन सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीन अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का औरतों से सम्बोधन।

इस्लाम की शिक्षाएं शांति और सुरक्षा का साधन हैं। इस्लाम की शिक्षाएं बिना किसी संदेह मानव जाति के लिए शांति और सुरक्षा की ज़मानत हैं इन की शिक्षाएं ही सहानुभूति, प्रेम और मानवता पर आधारित हैं, और ये वही मूल्य हैं जिन पर जमाअत अहमदिया विश्वास रखती है कि इस्लाम किसी भी प्रकार के अन्याय और अत्याचार की हरगिज़ आज्ञा नहीं देता।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि सभी इंसान समान हैं, न तो गोरे को काले पर कोई प्राथमिकता है और न ही काले को गोरे पर कोई प्राथमिकता है न ही अरब वाला अजम वाले पर कोई प्राथमिकता जताए और न अजम वाला अरब वालों पर कोई प्राथमिकता जताए। आपने सारे संसार के अधिकारों की जबरदस्त मशाल को जलाते हुए फरमाया कि सारे इंसान बराबर होते हैं और उन के अधिकार बराबर हैं। सभी इंसान समान हैं और उनके पास समान अधिकार हैं।

अल्लाह तआला ने दुनिया के सभी देशों में रसूल भेजे हैं और मुसलमानों को नबियों का सम्मान करने का आदेश दिया है। यही कारण है कि हम सभी धर्मों की संस्थापकों को बहुत ही सम्मान जनक तरीके से देखते हैं और किसी के ख़िलाफ कोई बात करने की सोच भी नहीं सकते।

कुरआन करीम नफरत की एक क्रम को समाप्त करने के लिए जो आख़िर दुश्मनी और अत्याचार पर आधारित होता है मुसलमानों से कहता है कि वे धैर्य दिखाएं और प्रत्येक समय उच्च आचरण का प्रदर्शन करें।

जब तक दुनिया की प्राथमिकता भौतिक संपत्ति और शक्ति होगी हम दुनिया में सच्ची शांति कभी नहीं देख सकते ।
बेशक यही वह लालच है जो अपने लाभ के लिए दूसरों के अधिकारों को छीनने की तरफ प्रेरित करती है जिस से फिर उपद्रव पैदा होता है जो सारी दुनिया में फैलता है।

जर्मन मेहमानों से सय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला का ख़िताब।

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

26 अगस्त 2017 (दिनांक रविवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 5:30 बजे मर्दाना जलसा गाह में नमाज़ फज्र पढ़ाई। नमाज़ के अदा करने के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास में आए। सुबह हूज़ूर अनवर ने, डाक देखी और विभिन्न प्रकार के दफतर के मामलों को देखा।

आज कार्यक्रम के अनुसार लजना जलसा गाह में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का लजना के सम्मेलन को ख़िताब था। आज लजना के जलसा गाह में सुबह के जलसा का आरम्भ 10 बजे हज़रत बेगम साहिबा की अध्यक्षता में हुआ जो दोपहर 11: 30 बजे तक जारी रहा। इस सत्र में तिलावत कुरआन, उसका उर्दू अनुवाद और उर्दू नज़्म और अरबी क़सीदा के अलावा तीन भाषण हुए।

कार्यक्रम के अनुसार दोपहर 12 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ लजना जलसा गाह में तशरीफ़ लाए। नाज़िमा आला तथा नेश्नल सदर लजना इमा अल्लाह जर्मनी ने अपनी उप नाज़मात के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का स्वागत किया और महिलाओं ने जोश से नारे बुलंद करते हुए अपने प्यारे आक़ा का स्वागत किया। लजना के इस इज्साल का आरम्भ कुरआन करीम की तिलावत से हुआ जो अज़ीज़ा दुर्रेअजम हियूबश साहिबा ने की और इसका उर्दू अनुवाद फोज़िया बुश्रा साहिबा ने पेश किया। इसके बाद अज़ीज़ा अनीकह शाकिर बाजवा साहिबा ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह अन्हों की नज़म

अहदे शिकनी न करो अहले वफा हो जाओ

पृष्ठ 7 पर शेष

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला ने जिस प्रकार और जिस स्तर के इंसाफ और न्याय को स्थापित करने के लिए मुसलमानों को हिदायत फरमाई है किसी अन्य धार्मिक किताब में ये स्तर मौजूद नहीं है। लेकिन दुर्भाग्य से, इस समय प्रत्येक स्तर पर मुसलमानों में ही एक ऐसा बड़ा वर्ग है, लीडरों में भी और उल्मा में भी जो इंसाफ और न्याय की मांगों को पूरा नहीं करते हैं। इसी तरह, घरों में सामान्य मुसलमानों में सामान्य मामलों के आम मामलों में आम तौर पर इंसाफ और न्याय की गुणवत्ता देखने में नहीं आती है जो ख़ुदा तआला ने स्थापित फरमाई हैं, जो एक मोमिन से अपेक्षित है। घरेलू मामलों में मतभेद हैं तो इस के लिए पुरुषों की तरफ से महिलाओं की तरफ से भी, कई बार ग़लत घटनाओं के साथ अदालतों में मुदकमें किए जााते हैं। झूठी गवाहियां पेश की जाती हैं। नाजायज़ अधिकार लेने के लिए या किसी का हक मारने के लिए झूठ और ग़लत बोलने से काम लिया जाता है। अत: कि बहुत बड़ी संख्या ऐसी है जो अपना हक लेने या यह समझते हुए कि मेरा हक है और दूसरों का हक मारने के लिए सच्चाई से काम नहीं लेती।

आज कल समाज में कई समस्याएं इस लिए हैं कि इंसाफ और न्याय की गुणवत्ता इस स्तर की नहीं है जो अल्लाह तआला चाहता है। आपकी बात को तोड़ कर पेश करना सामान्य है अफ़सोस इस बात का होता है कि कभी कभी हम में से भी कुछ लोग दुनियादारी और परिवेश के प्रभाव में बावजूद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने के ऐसी बातें कर जाते हैं जो तथ्यों से दूर होती है।

कुछ जगह धार्मिक मतभेद होते हैं और इस वजह से दूसरे धर्मों वाले दुर्व्यवहार भी कर जाते हैं ऐसे हालात में एक मोमिन का यह काम नहीं है कि क़ौमों और अन्य धर्मों के लोगों के दुर्व्यवहार का बदला उसी तरह लें और न्याय की मांगें पूरी न करें।

आजकल मुसलमानों के अन्यायों के बारे में पश्चिमी देशों में बहुत कुछ कहा जाता है, जो लोग अपने धर्म वालों के साथ न्याय नहीं करते हैं वे ग़ैरों से क्या न्याय करेंगे। यह एक बड़ी त्रासदी है, और मुसलमान ही अपनी हरकतों के कारण इस्लाम को बदनाम कर रहे हैं।

अत: हमने अगर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत के अहद को पूरा करना है और आप के मिशन को पूरा करना है और इस्लाम के संदेश को दुनिया तक पहुंचाना है और तब्लीग़ का हक अदा करना है तो फिर इसी नियम के अनुसार सभी को उच्च नैतिकता को अपनाना होगा जो इस्लाम की शिक्षा है, जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उपदेश फरमाए हैं, जिनके बारे में हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया है कि यह करो। अगर हमारी गवाहियाँ हक और न्याय के अनुसार नहीं हैं, यदि हमारे घरेलू और सामाजिक संबंध आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरादों के अनुसार नहीं हैं, तो हमारे दिल दुश्मनों के लिए भी द्वेष और हसद से पवित्र नहीं हैं, तो फिऱ हमारी तब्लीग़ वास्तविक तब्लीग़ नहीं होगी।

अल्लाह तआला करे कि हम अल्लाह तआला के आदेशों पर चलते हुए अपनी ज़िन्दगियों को ढालने वाले हों और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत के हक को पूरा करने वाले हों और आप की बैअत का हक़ अदा करने वाले हों हम दूसरों के लिए मार्गदर्शन और न्याय का एक नमूना बनने वाले हूं।

आदरणीय हसन मुहम्मद ख़ान आरिफ, पूर्व उप वकीलुल-तबशीर की कैनेडा में वफात मरहूम का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 10 नवम्बर 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَ لَوْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَ الْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا اَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۫ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰٓى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ وَ اِنْ تَلْوٗٓا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا (अन्निसा: 136)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ ۫ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓى اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ اِعْدِلُوْا ۫ هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۫ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ (अल्माइद: 9)

وَ مِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَ بِهٖ يَعْدِلُوْنَ (अल्आराफ: 182)

अल्लाह तआला ने जिस प्रकार और जिस स्तर के इंसाफ और न्याय को स्थापित करने के लिए मुसलमानों को हिदायत फरमाई है किसी अन्य धार्मिक किताब में ये स्तर मौजूद नहीं है। लेकिन दुर्भाग्य से, इस समय प्रत्येक स्तर पर मुसलमानों में ही एक ऐसा बड़ा वर्ग हैं, लीडरों में भी और उल्मा में भी जो इंसाफ और न्याय की मांगों को पूरा नहीं करते हैं। इसी तरह, घरों में सामान्य मुसलमानों में सामान्य मामलों के आम मामलों में आम तौर पर इंसाफ और न्याय की गुणवत्ता देखने में नहीं आती है जो ख़ुदा तआला ने स्थापित फरमाई हैं, जो एक मोमिन से अपेक्षित है। घरेलू मामलों में मतभेद हैं तो इस के लिए पुरुषों की तरफ से महिलाओं की तरफ से भी, कई बार ग़लत घटनाओं के साथ अदालतों में मुदकमें किए जााते हैं। झूठी गवाहियां पेश की जाती हैं। नाजायज़ अधिकार लेने के लिए या किसी का हक मारने के लिए झूठ और ग़लत बोलने से काम लिया जाता है। अत: कि बहुत बड़ी संख्या ऐसी है जो अपना हक लेने या यह समझते हुए कि मेरा हक है और दूसरों का हक मारने के लिए सच्चाई से काम नहीं लेते। झूठ बोलते हैं और अदालत को भी धोखे में रखते हैं। कुछ स्थान पर इंसाफ करने वाले ग़लत फैसले अपने व्यक्यिगत स्वार्थों के लिए कर लेते हैं मानो कि निज़ाम ही बिगड़ गया है। तो बहरहाल इस बे इंसाफी से समाज में बुराइयां फैलती चली जाती हैं।

फिर राष्ट्रीय स्तर पर हुकमरान न्याय की आवश्यकताओं को पूरा नहीं करते, न ही अपनी प्रजा के लिए इंसाफ की मांग पूरी की जा रही होती है न हीं देशों के बीच के संबंधों में भी न्याय की मांग पूरी की जा रही होती है।

उलेमा हैं तो उन्होंने धर्म को अपने व्यक्तिगत हितों को पाने का माध्यम बना लिया है और दावा मुसलमानों का यह है कि हम ख़ैरे उम्मुत हैं और इस्लाम ही दुनिया की समस्याओं का उचित समाधान प्रस्तुत करता है। निश्चित रूप से मुसलमान ख़ैरे उम्मुत हैं, यदि वे अल्लाह तआला के आदेशों का पालन करते हैं और कुरआन की शिक्षाओं का पालन करे। वास्तव में, इस्लाम ही दुनिया की सभी समस्याओं का समाधान प्रदान करता है, शर्त यह है कि इसकी शिक्षा के अनुसार न्याय स्थापित

किया जाए।

ये आयतें जो मैं ने तिलावत की हैं ये तीन अलग-अलग सूरतों की हैं। अन्निसा की, अलमयाद: की और अल्आराफ की।

पहली आयत जो अन्निसा की है इसका अनुवाद यह है कि हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अल्लाह तआला के लिए गवाह बनते हुए न्याय को मज़बूती से स्थापित करने वाले बन जाओ चाहे ख़ुद अपने ख़िलाफ गवाही देनी पड़े या माता पिता और क़रीबी रिश्तेदारों के ख़िलाफ। चाहे अगर एक अमीर हो या ग़रीब अल्लाह तआला ही सबसे अच्छा निगरान है इसलिए अपनी इच्छाओं का पालन न करो, और न्याय से न हटो। अगर तुम ने गोल मोल बात की या सच्चाई से हट गए, तो निश्चित रूप से अल्लाह जो तुम करते हो इस के बारे में बहुत कुछ जानता है।

तो यह वह आदेश है न्याय की गुणवत्ता स्थापित करने का। निजी घरेलू मामलों में और सामाजिक मामलों में भी, कि जैसी भी अवस्था हो जाए इंसाफ और न्याय पर हमेशा स्थापित होना चाहिए। मोमिनों को यह आदेश है कि अल्लाह तआला के लिए और अल्लाह तआला की आज्ञाओं के अनुसार मोमिन की गवाही होनी चाहिए और यह तभी हो सकता है जब अल्लाह तआला पर पूर्ण विश्वास हो। ईमान की गुणवत्ता अत्यंत उच्च स्तर की और मज़बूत हो। इस बात पर इंसान स्थापित हो कि जो भी मुझ पर स्थिति हो मैंने न्याय पर मज़बूती से स्थापित होना है और यह मजबूती तभी पैदा होती है या उसकी मजबूती का तभी पता लगेगा जब इंसान अपने ख़िलाफ भी गवाही देने के लिए तैयार हो। अपनी पत्नी को बच्चों के ख़िलाफ भी गवाही देने के लिए तैयार हो यदि आवश्यक हो तो अपने माता-पिता के ख़िलाफ गवाही देने के लिए तैयार हो। निकटवर्ती रिश्तेदारों के ख़िलाफ गवाही देने के लिए तैयार हो। फरमाया कि इच्छाओं का अनुकरण इंसाफ से दूर करता है यदि अपनी इच्छाओं का पालन करने लग गए तो इंसाफ और न्याय से दूर हो जाओगे।

आज कल समाज में कई समस्याएं इस लिए हैं कि इंसाफ और न्याय की गुणवत्ता इस स्तर की नहीं है जो अल्लाह तआला चाहता है। आपकी बात को तोड़ कर पेश करना सामान्य है अफ़सोस इस बात का होता है कि कभी कभी हम में से भी कुछ लोग दुनियादारी और परिवेश के प्रभाव में बावजूद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने के ऐसी बातें कर जाते हैं जो तथ्यों से दूर होती है। अल्लाह तआला तो फरमाता है कि चाहे व्यक्तिगत या अपने माता-पिता का नुकसान भी हो तो भी कभी ऐसी बात न करो जो गोलमोल हो या किसी तरह भी यह धारणा पैदा हो कि तथ्यों को छिपाने की कोशिश की गई है। सच्ची गवाही देने से बचने की कोशिश की गई है। ये बातें हम रोज़ के मामलों में देखते हैं। उदाहरण के लिए, पति पत्नी के मामले हैं, कज़ा में कई मामले इस प्रकार के आते हैं जहां सच्चाई से काम नहीं लिया जाता। लेन-देन में मामले हैं, हम यह भी देखते हैं कि तथ्यों को वहां छिपाया जाता है। कुछ धर्म का ज्ञान रखने वाले और ज़ाहिरी तौर पर सेवा में आगे रहने वाले भी ऐसी हरकतें कर जाते हैं कि व्यक्ति परेशान हो जाता है कि ऐसे लोग भी इस तरह की बातें कर सकते हैं, जो ज़ाहिरी तौर पर बड़े विद्वान और धर्म का ज्ञान रखने वाले हैं और उनका अच्छा प्रभाव भी स्थापित है अल्लाह तआला तो फरमाता है कि अपने ख़िलाफ, अपने माता-पिता के ख़िलाफ, अपनी निकटवर्ती रक्त सबंधों के ख़िलाफ भी हक को न छुपाओ। हक को बहरहाल प्रकट करो। ये लोग सिर्फ दोस्तियां निभाने के लिए या अपने स्वार्थों के लिए हक का छुपाते हैं. या सच्ची गवाही देने से बचते हैं। और अगर सच्चाई स्पष्ट हो जाए तो अपनी बात के समर्थन के लिए उन्होंने तैय्यारी भी ख़ूब की होती है कि किस प्रकार इस से बचना होता है और क्या दलीलें देनी होती हैं।

लेकिन हमेशा याद रखना कि अल्लाह तआला फरमाता है कि जो कुछ भी तुम करते हो उसे अल्लाह तआला सबसे अच्छा जानता है। वह अच्छी तरह जानता है। अल्लाह तआला को धोखा नहीं किया जा सकता है। अल्लाह तआला फरमाता है इस दुनिया के लाभों को तुम प्राप्त कर सकते हो लेकिन अल्लाह तआला की पकड़ से यहां बच भी गए तो अगले जहान में पकड़े जाओगे। हमारे सारे कर्मों की ख़बर रखने वाला ख़ुदा वे सारे कर्म सामने रख देगा जिस में वह जिसमें वह सारी बातें होंगी।

जिस इमाम को हम ने स्वीकार किया है इस ने तो इस कुरआन के आदेश के अनुसरण में ऐसे उदाहरण दिए हैं, जो ग़ैरों को भी आश्चर्यचकित करता है। अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे से बहुत पहले जवानी के ज़माने की एक घटना रिवायतों में आती है कि एक बार अपने पिता के मज़ारेईन के ख़िलाफ एक मुकदमा में आप ने सत्य और न्याय की मांग को पूरा करते हुए सच्ची बात को जिस का लाभ मज़ारईन को हुआ और उन के पिता को हानि और नुकसान हुआ था। आपके वकील ने आपको पहले बताया कि जिस तरह से मैं कहता हूं, अगर ऐसी गवाही नहीं दी गई तो हानि होगी। आपने फरमाया जो भी हो जो हक बात है मैं तो वही बात बताऊंगा। तो बहरहाल जज ने मज़ारेईन के हक में डिग्री दे दी और देखने वाले बताते हैं कि मुकदमा हारने के बाद, जब आप के ख़िलाफ फैसला हो गया और आप अदालत से वापस हुए तो इस तरह आपका ख़ुश वापस लौट रहे थे कि वे लोग जिन्हें इस निर्णय का पता नहीं था, वे समझे कि शायद आप मुकदमा जीत कर वापस आ रह हैं।

(उद्धरित तारीख़े अहमदियत, पृष्ठ 72 से 73. आइना कमालाते इसालाम, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 5 पृष्ठ 2 9 8)

आँ हज़रत आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जिस सच्चे गुलाम को हम ने स्वीकार किया है उसका नमूना तो यह है और इस नमूने को सामने रखते हुए हमें हर मामले में अपनी गवाहियों की समीक्षा करनी चाहिए।

इसी तरह, एक और उदाहरण यह है कि इन देशों में, पश्चिमी देशों में कई लोग हैं जो अपनी आय को कम बता कर या सरकार से कुछ विशेषाधिकार प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। लेकिन अब दुनिया की आर्थिक स्थिति बदतर हुई है, सरकारों ने इन विकसित देशों की गहरी समीक्षा करना शुरू कर दी है, और जहां भी उन्हें संदेह होता तुरंत तहकीक करने लगते हैं। इसलिए अहमदियों को अपनी और जमाअत को बदनामी से बचाने के लिए और सबसे बढ़कर अल्लाह तआला की ख़ुशी पाने के लिए सांसारिक नुकसान सहन करना चाहिए और सच्चाई को नहीं छिपाना चाहिए। हमेशा सच्ची बात करनी चाहिए यदि इरादा नेक होगा अल्लाह तआला के लिए, गवाह बनते हुए न्याय को दृढ़ता से पकड़ंगे, और अपनी गवाहियों के स्तर को सच्चाई पर स्थापित करेंगे, तो अल्लाह तआला जो रब्ब है जो रज़्ज़ाक है वे ख़ुद ही सामान भी उपलब्ध कर देगा। ख़ुद ही रिज़्क में बरकत डाल देगा। इसलिए हमें अपनी समीक्षाओं को हर समय करना चाहिए। यदि हम न्याय के ऐसे मानक स्थापित करने की कोशिश नहीं करेंगे तो न घरों की शांति और स्थिरता स्थापित हो सकती है, न जहां हम रहते हैं, उस क्षेत्र और समाज की शांति और समृद्धि हो सकती है। इसका पालन न करने से जमाअत के लोगों के आपस के संबंधों में भी दूरियां पैदा होंगी।

आश्चर्य होता है कुछ लोग ग़लत बयानी और अन्याय में इस हद तक चले जाते हैं कि कुछ बच्चियों के माता-पिता ने मुझे शिकायत की कि हमारी लड़की का एक जगह अगर रिश्ता समाप्त हो गया तो उसके पिछले ससुराल वाले हर जगह जहां भी रिश्ते की बात चलती वहां पहुंचकर झूठ और गलत बात करते हैं और लड़की को बदनाम करते हैं। इसी तरह, कुछ लड़के भी मेरे पास आए जिन को लड़की के माता-पिता इस तरह से बदनाम करते हैं। उनके ख़िलाफ गवाही दे कर उनके रिश्ते तुड़वाए जा रहे हैं या उनमें विच्छेद कर ने की कोशिश की जा रही है। तो यह एक बहुत ख़तरनाक चीज़ है यह समाज की शांति और विनाश का मामला है। यह अल्लाह तआला के आदेशों से दूर हटने वाली बात है अल्लाह तआला ने तो हम पर उपकार किया है कि हमें ज़माने के इमाम को मानने की तौफीक प्रदान की। अल्लाह तआला ने भाई भाई बनाने का प्रबंधन किया है और हम अपने कुछ निजी हितों के लिए या अपने अंहकारों की सन्तुष्टि के लिए या दिलों में कुछ द्वेष रखते हुए एक दूसरे से बदले लेने की कोशिश करते हैं और बदला लेने के लिए इस हद तक चले जाते हैं। कि ख़ुदा तआला के भय का भी दिलों से निकाल देते हैं। अगर किसी के विचार में इस पर अत्याचार हुआ भी है तो तो अब मामला हल हो जाने के बाद। ख़त्म हो जाने के बाद अत्याचार करने वाले से अलग हो जाएं। अल्लाह तआला तो मामला की ख़बर रखने वाला है इस पर मामला छोड़ेंष इस बात में एक मोमिन का सौभाग्य भी यह है कि अल्लाह तआला पर मामला छोड़ दें।

फिर अपने समाज में इंसाफ और न्याय स्थापित करने के बाद, अल्लाह तआला ने मामिनों को यह भी आदेश दिया है कि अपने व्यक्तिगत सामाजिक और राष्ट्रीय मामलों में इंसाफ और न्याय के उच्च मानदंड स्थापित करना तुम्हारी ज़िम्मेदारी है, और अन्य क़ौमों से भी कि इंसाफ और न्याय का व्यवहार करते हुए इस के उच्च स्तर स्थापित करो। यदि दुश्मनों के साथ भी तुम ने इंसाफ और न्याय के स्तर स्थापित नहीं किए तो तुम तक्वा पर चलने वाले नहीं हो। अत: सूरह माइद: की आयत 9 है जो मैं ने तिलावत की है इस का अनुवाद यह है कि अल्लाह तआला फरमाता है कि ऐ वे लोगो जो ईमान लाए हो अल्लाह तआला के लिए मज़बूती से निगरानी करते हुए इंसाफ के पक्ष में गवाह बन जाओ और किसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें कभी इस बात पर आमादा न करे कि तुम न्याय न करो। न्याय करो, यह तक्वा के सब से क़रीब है और अल्लाह तआला से डरो। निस्संदेह अल्लाह तआला इस बात को

हमेशा जानता है तो तुम करते हो।

कुछ जगह धार्मिक मतभेद होते हैं और इस वजह से दूसरे धर्मों वालों से दुर्व्यवहार भी कर जाते हैं तो ऐसे हालात में एक मोमिन का यह काम नहीं है कि क़ौमों और अन्य धर्मों के लोगों के दुर्व्यवहार का बदला उसी तरह ले और न्याय की मांगें पूरी न करें। इस बारे में हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल ने एक बार दर्स में उल्लेख किया कि जैसे उस ज़माने में आर्य लोग मुसलमानों को नौकरियों में तंग करते थे, निकाल देते थे कि अगर वे ऐसा करें भी तो मुसलमान का काम नहीं है कि उनसे बदले ले। हम तभी इस आदेश का अनुसरण कर सकते हैं।

(उद्धिरत हकायकुल फुरकान जिल्द 2 पेज 85 तफसीर सुरह अलमाइद: आयत 9)

मोमिन का यह काम कभी नहीं है कि न्याय स्थापित न हो। मोमिन का कर्तव्य है कि वह न्याय स्थापित करे और तक्वा से काम ले और अपना मामला ख़ुदा तआला पर छोड़े, जो सब बातों से अवगत है। यह एक वास्तविक मोमिन का कार्य है कि वह अल्लाह तआला के आदेश को दृढ़ता से स्थापित करे और उस पर स्थापित हो और इस में कण मात्र भी लापरवाही न करे। यह सच्चे मुसलमान की निशानी है। इंसाफ के पक्ष में गवाह बनने का अर्थ ही यह है कि इस्लामी शिक्षा पर ऐसे अनुकरण करो इस तरह से पैरवी करो कि तुम्हारा अनुकरण या व्यावहारिक रूप से लोगों के लिए, अन्य धर्मों के लिए, समाज के लिए एक उदाहरण बन जाए। अन्य क़ौमों के लिए एक उदाहरण बनें। आजकल मुसलमानों के अन्यायों के बारे में पश्चिमी देशों में बहुत कुछ कहा जाता है, जो लोग अपने धर्म वालों के साथ न्याय नहीं करते हैं वे ग़ैरों से क्या न्याय करेंगे। यह एक बड़ी त्रासदी है, और मुसलमान ही अपनी हरकतों के कारण इस्लाम को बदनाम कर रहे हैं। शासकों जनता के लिए सही हैं लोग सरकार से लड़ रहे हैं, सरकारों से लड़ रहे हैं आबादी की आबादी क्रूरता को शिकार हो रही है और तबाह हो रही है तथा कथित इस्लाम के गिरोह अपने लोगों को भी मार रहे हैं और दूसरे देशों में भी हमारे लोगों को मार रहे हैं इस लिए हम भी अपना हक प्रयोग कर हैं। हांलांकि मुसलमानों को भी मुसलमान मार रहे हैं। हां दूसरों से मदद ज़रूर ले रहे हैं।

अब पिछले दिनों एक नई योजना इन चरमपंथियों के समूह की सामने आई है जो यहाँ विभिन्न शहरों में, देशों में समय समय पर हमले करते रहते हैं कि अब यूरोप में हम बच्चों पर हमले करेंगे और माता-पिता के सामने उनके बच्चों को मारेंगे क्योंकि इन पश्चिमी देशों के बमों के बौछार करके हमारे बच्चों पर बमबारी की, हमारे गांवों को नष्ट कर दिया। हालांकि यह बमबारी भी तो मुस्लिम शासकों के कहने पर की गई है। हालांकि यह क़ौमों की दुश्मनी फिर और अधिक दुश्मनियों के बच्चे पैदा करती चली जाती है और यह क्रम कभी समाप्त नहीं होता है इसलिए अल्लाह तआला ने फरमाया कि किसी क़ौम की दुश्मनी भी तुम्हें इस हद तक जाने के लिए मजबूर न करे कि तुम न्याय की मांग को पूरी न करो। न्याय की मांग बहरहाल तुम ने पूरी करनी हैं और इसी वजह से अत्याचार बढ़ रहा है कि न्याय की माग पूरी नहीं होतीं और जो ग़ैर मुस्लिम हमारे ख़िलाफ हैं वे भी इसलिए कि मुसलमानों का व्यावहारिक नमूने इस्लामी शिक्षा के ख़िलाफ हैं। चाहिए तो यह था कि मुसलमान अपने नमूना दिखाते हुए इस्लाम की सुंदर शिक्षा को दुनिया को बताते हुए इस्लाम की तब्लीग़ करते लेकिन यहाँ तो हिसाब ही उल्टा है और मुस्लिम देशों में जुल्मों के अलावा तो कुछ देखने में नहीं आता। इस्लाम के समर्थन में गवाही केवल इस्लाम की शिक्षा की सुंदरता वर्णन करके ही दी जा सकती है। कुरआन करीम का कितना ख़ूबसूरत आदेश है कि किसी भी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें इस बात पर आग्रह न करे कि तुम न्याय न करो। यह आदेश किसी अन्य धार्मिक पुस्तक में नहीं दिया गया। न्याय स्थापित करने के लिए कोई भेदभाव नहीं है। न्याय प्राप्त करने का अधिकार मुस्लिम और ग़ैर-मुसलमान दोनों के लिए बराबर है। बल्कि, दुश्मनों से व्यवहार में न्याय की आवश्यकताएं पूरी करनी हैं। इस पर बहुत ध्यान देना है यह किस प्रकार की सुन्दर शिक्षा है? लेकिन अफसोस है कि इस शिक्षा के बावजूद, मुसलमानों के कर्म ने ग़ैर मुस्लिम दुनिया में इस्लाम को बदनाम कर दिया है। आम मुसलमान, शासक, उल्मा सब ये हरकतें कर रहे हैं और उनकी यह हरकतें हम पर यह ज़िम्मेदारी डालती हैं कि अपने व्यावहारिक नमूनों से दुनिया को बताएं कि इस्लाम कितनी इंसाफ और न्याय की शिक्षा देता है जिसकी वजह से दुनिया में शांति और एक सुरक्षा हो सकती है आँ हज़रत आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किस बारीकी से सहाबा से पालन करवाया इसके कुछ उदाहरण देता हूँ।

एक बार आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़बर लाने के लिए कुछ सहाबा को मक्का में भेज दिया, ताकि उसे सूचित किया जा सके। मुसलमानों की उस समय परिस्थितियां बहुत ख़तरनाक थीं। हर समय दुश्मनों के हमलों और उन्हें नुकसान पहुंचाने के प्रयास रहते थे। ऐसे मामलों में जब सहाबा ख़बर लाने के लिए गए थे, तो उन्होंने कुछ पुरुष हरम की सीमा में मिले। दुश्मनों के आदमी थे। उन मुसलमानों ने सोचा कि उन्होंने हमें देख लिया है इसलिए अगर अब हम ने उन्हें जीवित छोड़ दिया तो यह मक्का वालों को ख़बर कर देंगे और वे हम पर हमला कर देंगे और हमें मार देंगे। इस विचार के साथ सहाबा ने हमला कर के उन काफिरों में से एक या दो को मार दिया। जब ये सहाबा वापस मदीना पहुंचे तो पीछे से मक्का वाले आदमी भी आ गए कि इस तरह आप के लोगों ने हमारे दो आदमी मार दिए हैं और उन्होंने हरम के अंदर मारे हैं। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन की बात सुन कर यह नहीं फरमाया कि तुम लोग भी ज़ुल्म करते हो। अब तुम्हारे साथ यह व्यवहार किया गया है तो तुम लोग क्यों इतना चिल्ला रहे हो इसके बजाए, आपने जो तत्काल कार्रवाई की और उन्हें जवाब दिया था कि तुम्हारे साथ ग़लत हुआ है और तुम्हारे साथ न्याय किया जाऐगा। यह संभव है कि हरम होने के कारण काफिरों ने पूरी तरह से बचाव करने की कोशिश नहीं की। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अरबों के नियमों के अनुसार दोनों मृतकों का ख़ून का बदला दिया जाएगा और यह आप ने अदा किया और साथ ही सहाबा की भी बड़ी सरज़निश कि तुम ने यह क्या ग़लत काम किया।

(शरह ज़रकानी अला मवाहेबुर्रेहमानी जिल्द 2 पृष्ठ 238 से 241 सिरया अमीरुल मोमिनीन अब्दुल्लाह बिन हजश प्रकाशक दारुल कुतुब अलइल्मिया बैरूत 1996 ई)

इसी तरह एक घटना मिलती है कि एक युद्ध में ग़लती से एक महिला सहाबा के हाथों कत्ल हो गई। आप को इस का ज्ञान हुआ तो आप सहाबा पर बहुत नाराज़ हुए। और एक रिवायत में आता है कि आप के चेहरा पर ग़ुस्सा के इतने चिन्ह थे कि इस से पहले कभी नहीं देखे गए थे। सहाबा ने कहा कि महिला ग़लती से मारी गई। लेकिन ग़लती से मारे जाने के बावजूद आपको बड़ी कठिन तकलीफ पहुंची कि न्याय स्थापित नहीं किया गया।

(सही अलबुख़ारी किताबुल जिहाद और वलयसर कत्ल सबियान फिल हरब 3014)

फिर न्याय की स्थापना करते हुए एक यहूदी और एक मुसलमान के मामले का कैसे आप ने फैसला फरमाया। रिवायत में आता है कि एक यहूदी का एक सहाबी के ज़िम्मे चार दिरहम कर्ज़ था। जिस की समय सीमा समाप्त हो गई। उस यहूदी ने आकर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से आकर शिकायत की कि इस आदमी के ज़िम्मे मेरा चार दिरहम कर्ज़ है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस सहाबी को बुलाया जिन का नाम अब्दुल्लाह था और उन्हें कहा कि इस यहूदी का हक दे दो। हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा कि उस हस्ती की कसम जिस ने आप को सच्चाई के साथ भेजा है मुझे कर्ज़ अदा करने की ताकत नहीं है आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दोबारा उन्हें कहा कि इस आदमी का कर्ज़ अदा कर दो। अब्दुल्लाह ने फिर वही कहा और कहा कि मैंने इसे कह दिया है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमें ख़ैबर भेजेंगे और माल ग़नीमत में से कुछ हिस्सा देंगे और वापस आकर मैं आप का कर्ज़ अदा कर दूंगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इस का हक अदा करो। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब कोई बात तीन बार फरमा देते थे तो वह सम्पूर्ण फैसला समझा जाता था अत: अब्दुल्लाह उसी समय बाज़ार में गए। उन्होंने एक चादर तह बन्द के रूप में पहनी हुई थी और सिर का कपड़ा भी था। सिर का कपड़ा उतार कर उन्होंने तह बन्द के स्थान पर बांध लिया था। और चादर चार दिरहम में बेच कर कर्ज़ अदा कर दिया।

(मुस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 5 पृष्ठ 336 हदीस 15570 मुसनद इब्ने अबी हदरद सलमा मुद्रित आलेमुल कुतुब बैरूत 1998 ई) तो यह आप के स्तर थे जो आप ने स्थापित फरमा दिए। यहूदी को नहीं फरमाया कि उस ने जब छूट मांगी तो वह छूट दे। बल्कि अपने सहाबी को शीघ्र कहा कि इस का कर्ज़ अदा करो और इस के लिए उन्हें अपने जिस्म के कपड़े भी उतार कर बेचने पड़े।

तो यह गुणवत्ता हैं इंसाफ और न्याय की और यही गुणवत्ता है जो हम हर स्तर पर स्थापित रखेंगे तो इस ज़माने में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम के मानने वालों में शामिल होंगे। और वह उद्देश्य जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भव का है उसे पूरा करने वाले होंगे। आप इस्लाम की शिक्षाओं को फैलाने और दुनिया को दिखाने के लिए भेजे गए थे ताकि लोग अधिक से अधिक आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झण्डे के तले जमा हों। और यह काम उसी समय किया जा सकता है जब हम सच्चाई के साथ दुनिया को हिदायत करें, वहां हक के साथ अपनी इस शिक्षा के साथ न्याय स्थापित करें। अत: सूरह अल्आराफ की जो आयत मैंने तिलावत की है इस में अल्लाह तआला

ने इस बात का आदेश दिया है इस का अनुवाद यह है कि जिन्हें हम ने पैदा किया है उन में से ऐसे लोग भी हैं जो हक से साथ लोगों को हिदायत देते थे और इसी के माध्यम से इंसाफ करते थे।

हिदायत देने वाले हमेशा रहे हैं जो हक और इंसाफ की बात करते हुए हिदायत दे रहे हैं। और आज भी ऐसे लोग कामयाब होंगे जो हक के साथ हिदायत देने वाले हैं और इंसाफ करने वाले हैं। जब इंसान ख़ुद हिदायत पर स्थापित न हो तो दूसरों को क्या हिदायत देगा। जब तक ख़ुद इंसान न्याय पर स्थापित न हों तो दूसरों को क्या न्याय दे सकेगा।

अत: हमने अगर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत के अहद को पूरा करना है और आप के मिशन को पूरा करना है और इस्लाम के संदेश को दुनिया तक पहुंचाना है और तब्लीग़ का हक अदा करना है तो फिर इसी नियम के अनुसार सारी उच्च नैतिकता को अपनाना होगा जो इस्लाम की शिक्षा है, जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उपदेश फरमाए हैं, जिनके बारे में हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया है कि यह करो। अगर हमारी गवाहियाँ हक और न्याय के अनुसार नहीं हैं, यदि हमारे घरेलू और सामाजिक संबंध आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरादों के अनुसार नहीं हैं, तो हमारे दिल दुश्मनों के लिए भी द्वेष और हसद से पवित्र नहीं हैं, तो फिऱ हमारी तब्लीग़ वास्तविक तब्लीग़ नहीं होगी। हमारी परिस्थितियों और हमारे न्याय के मानकों को देखकर ग़ैर हमें कहेंगे कि पहले ख़ुद तो हिदायत का पालन करो। सबसे ख़ुद तो न्याय को अपने परिवेश में लागू करो और फिर हमें कहना। अत: बहुत बड़ी जिम्मेदारी है, जो हर अहमदी की है कि अपने कर्म से तब्लीग़ के रास्ते खोलें जो तब्लीग़ के रास्ते हमारे कर्मं से खुलेंगे, जो लोग इस्लाम से हमारी कर्म को देखते हुए परिचय प्राप्त करेंगे वह इस्लाम के गुणों से परिचय प्राप्त किए बिना रह नहीं सकेंगे।

अल्लाह तआला करे कि हम अल्लाह तआला के आदेशों पर चलते हुए अपनी ज़िन्दगियों को ढालने वाले हों और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत के हक को पूरा करने वाले हों और हम दूसरों के लिए मार्गदर्शन और न्याय का नमूना बनने वाले हों।

नमाज़ के बाद मैं एक नमाज़े जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा जो आदरणीय हसन मुहम्मद ख़ान आरिफ साहिब की है, जो आदरणीय फज़ल मुहम्मद ख़ान साहिब शिमलवी के पुत्र थे। हसन मुहम्मद ख़ान आरिफ, पूर्व उप वकीलुत्तबशीर रब्वा थे और अहमदिया गैज़ेट कनाडा के संपादक भी थे। 3 नवम्बर को 97 साल की आयु में उन का निधन हो गया। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। अल्लाह तआला की कृपा से मूसी थे। हसन मुहम्मद ख़ान आरिफ 26 फ़रवरी 1920 ई जालन्धर में पैदा हुए थे। उनके पिता फज़ल मुहम्मद खान शिमलवी ने 1915 में हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी के दस्ते मुबारक पर बैअत की सआदत पाई थी। हसन मुहम्मद ख़ान के पिता 35 वर्षों तक सरकारी विभागों में काम करते रहे और उप सहायक वित्त सलाहकार के रूप में सेवानिवृत्त हुए। तब्लीग़ का बहुत शौक था। उस युग में भी दो ब्रिटिश इन के द्वारा मुसलमान हुए थे और इसके अलावा, दर्जनों लोगों को उनके द्वारा अहमदियत स्वीकार करने का सौभाग्य प्राप्त दुआ। उन्होंने बी.ए किया और एक लम्बे समय तक सरकारी नौकरी करते रहे। पहले सरकारी नौकरी कर रहे थे। फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद के कहने पर बी.ए किया फिर बाद में रब्वा आकर एम ए किया।

1943 में हज़रत मुस्लेह मौऊद जब दिल्ली पधारे तब हसन मुहम्मद ख़ान आरिफ साहिब ने अपना जीवन वक्फ करने का फैसला किया, जबकि इस समय आप गवर्नमेंट ऑफ इंडिया के एक विभाग में कार्यरत थे। जब हसन मुहम्मद ख़ान आरिफ ने अपने पिता को यह बताया तो वह बहुत ख़ुश हुए और उन्होंने यह भी सलाह दी कि वक्फ करने जा रहे हो, यह मत सोचना कि तुम्हें बहुत आराम मिलेगा। अगर वास्तविक रंग में वक्फ करना है तो याद रखो कि यह कांटों की सेज है और यहाँ शहज़ादों वाला जीवन तुम्हें नहीं मिलेगा और आम आदमी की तरह तुम्हें रहना होगा और जो तुम्हारी वर्तमान आय है की तुलना में बहुत कम तुम्हें गुज़ारा मिलेगा और तुम्हें इस में गुज़ारा करना होगा। बहरहाल उन्होंने कहा कि "मैं ख़ुद को वक्फ करूँगा और अपने पिता के साथ से हज़रत मुस्लेह मौऊद की सेवा में मिलने के लिए गए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह ने फरमाया कि पहले अपना बी ए पूरा करो फिर वक्फ पर आना। अत: 1945 ई में उन्होंने में बीए किया। फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद को इस की सूचना दी। और आप ने फरमाया कि रिपोर्ट करो। इस के अनुसार आप गवर्मेन्ट की नौकरी से त्याग पत्र दे कर केन्द्र में पहुंच गए। और वहां आप को नायब वकील तिजारत बना दिया गया।

और फिर भारत के विभाजन के समय हसन मुहम्मद ख़ान आरिफ साहिब ने दरवेश के रूप में स्थायी रहने के लिए निवेदन किया। हज़रत मुस्लेह मौऊद ने इस को स्वीकार किया लेकिन बहरहाल केंद्र की आवश्यकता के अनुसार बाद में पाकिस्तान बुलाया गया। वहां बाद में उन्हें उप वकील तिजारत के रूप में ज़िम्मेदारी दी गई थी। फिर फुरकान फोर्स के कार्यालय प्रभारी भी रहे। 1951 ई में दफतर वकालत तब्शीर में नियुक्ति हुई फिर 1953 ई के पंजाब के दंगों के समय दफतर तहरीक जदीद पर पुलिस ने छापा मारा। इस बीच, हसन मुहम्मद ख़ान आरिफ को भी गिरफ्तार कर लिया गया क्योंकि आप के पास दुनिया से रिपोर्टें आती थीं और मुबल्लिग़ों को हर महीने पत्र लिखते थे। बहरहाल मार्शल ला लगने के बाद उन्हें छोड़ दिया गया। यूं अल्लाह तआला ने आप को अल्लाह तआला की राह में कैद होने का सौभाग्य दिया। आप दफतर कमेटी के इन्चार्ज रहे। फिर दोबारा तब्शीर में चले गए। नायब वकीलुत्तबशीर रहे। 30 साल तक आप को नायब वकीलुत्तबशीर के रूप में काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस के साथ दूसरे दफतरों में भी अस्थायी रूप से काम करने का अवसर मिला। वकील दीवान रहे। वकील तालीम रहे। वकील ज़िराअत रहे। वकील माल रहे। अफसर अमानत रहे। 1981 ई में उन्होंने रिटायर्मेन्ट ले ली इस के बाद यह कैनेडा हिजरत कर गए और कैनेडा जाकर अहमदिया गज़ट कैनेडा के सम्पादक के रूप में कार्य करना शुरू कर दिया और 2006 ई तक 26 सालों तक आप को यह सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ। शुरू की वसीयत करने वालों में से थे। वसीयत नम्बर आप को 5745 था। और तहरीक जदीद के सफ अव्वल के मुजाहेदीन में से थे। और उस समय आप का नम्बर 151 था।

1978 ई में उन्हों ने उर्दू भाषा में एक किताब "मुकद्दस कफन" लिखी। अंग्रेज़ी में इस किताब का अनुवाद का आरम्भ किया था। इन की अंग्रेज़ी भी बहुत अच्छी थी परन्तु हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने इर्शाद फरमाया कि उर्दू भाषा में यह किताब लिखें क्योंकि उर्दू भाषा में हज़रत मसीह मौऊद नासरी के कफन के बारे में यह पहली किताब होगी। इस के अतिरिक्त बच्चों के लिए भी बहुत सी किताबें आप ने लिखीं

उनकी शादी 1944 ई में आदरणीया सय्यदह अख्तर फैज़ी साहिबा के साथ हुई थी। यह फज़लुररहमान साहिब की बेटी थी। उनसे उनके चार बेटे और दो बेटियां हैं जो अमेरिका और कनाडा में ही हैं। उनकी बहू लिखती हैं जो फरीद अहमद आरिफ की पत्नी हैं कि मैंने देखा है कि बड़े तहज्जुद गुज़ार और नियमित विनय के साथ नमाज़ पढ़ने वाले थे। ख़िलाफत से बहुत गहरा इश्क और इताअत का संबन्ध था।

कहती हैं कि इन की वफात के बाद हमें पता चला कि पाकिस्तान में कई बेवाएं और अनाथ बच्चे ऐसे थे जिन की आप स्थायी सहायता करते थे।

अमीर साहब कनाडा लिखते हैं कि जिस क्षेत्र में यह रहते हैं वहाँ कई सिख रहते हैं और सिखों से दोस्ती की वजह से सिखों ने वहां जो अपनी एक सिख संस्कृत एसोसिएशन बनाई हुई है उसका सदर उन्हें बना दिया और बड़ा मजबूर किया कि आप हमारे सदर बनें। गाड़ी चला नहीं सकते थे परन्तु इस के बावजूद यह जुम्अ: पढ़ने के लिए ब्रेमटन से आते थे और रास्ते में दो तीन बसें बदलते थे। फर अमीर साहिब ने लिखा है कि कैनेडा आने के बाद अहमदिया गज़ट का स्तर इतना ऊंचा किया जो उन के लिए सम्मान की बात है। ख़िलफाह पर पूर्ण आस्था और बहुत मुहब्बत और विश्वास रखते थे।

मैं भी उन्हें बचपन से जानता हूं, लेकिन ख़िलफात के बाद वहां एक ऐसा बदलाव था जिसे देख कर आश्चर्य होता था। प्रारंभ में जब कंप्यूटर ऐसे नहीं थे, तो वे अपने हाथों से अहमदिया गज़ट का उर्दू का हिस्सा लिखते थे और अंग्रेज़ी टाइप करते थे। फिर ख़त्बा का अंग्रेज़ी अनुवाद करते और बार बार पढ़ते। जब तक आप संतुष्ट न होते इसे गज़ट में शामिल न करते। स्मृति भी बहुत अच्छी थी इस्लामी इतिहास का गहन अध्ययन था। कुछ पुस्तकों और पत्रिकाओं का अध्ययन हर समय किया करते थे। अख़बार बहुत शौक से पढ़ते। अक्सर सहाबा के ईमान वर्धक घटनाएं सुनाया करते थे। लिखने वाले कहते हैं कि उनके ज़माने में अहमदिया गज़ट का शायद ही ऐसा पर्चा हो जिस में हज़रत ख़लीफतुल अव्वल रज़ियल्लाहो अन्हो की मिरकातुल-यकीन से कोई न कोई ईमान वर्धक घटना उर्दू और अंग्रेजी दोनों में प्रकाशित न हो।

अल्लाह तआला मरहूम से क्षमा और रहम का व्यवहार करे। उन के स्तर बढ़ाए और उन के बच्चों को भी और उन की नस्लों को ख़िलाफत और अहमदियत के साथ मज़बूत रिश्ते बनाए रखने की तौफीक़ प्रदान फरमाए।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

के कुछ शेर अच्छी आवाज़ में पढ़े। इस के बाद कार्यक्रम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा के क्षेत्र में सफलता हासिल करने वाली 46 छात्राओं को प्रमाण पत्र प्रदान किए और हज़रत बेगम साहिबा ने उन छात्राओं को पदक पहनाए। शिक्षा के पुरस्कार पाने वाली उन ख़ुशनसीब छात्राओं के नाम निम्नलिखित हैं:

नाइला इफ्तेख़ार अहमद साहिबा PhD in Human Medicine,
आफिया अनवर साहिबा State Examination in Pharmacy
ज़ुहा इस्लाम साहिबा State Examination in Human Medicine
राहतुल ऐन ख़ालिद महमूद साहिबा State Examination in Dentistry,
फ़ाइज़ह सैयद अहमद साहिबा 1st State Examination in Teaching
सादिया सैयद अहमद साहिबा State Examination in Teaching
हिबतुलहई सय्यदा ग़फ़ूर साहिबा State Examination in Dentistry
अरूज मलिक साहिबा 1st State Examination in Teaching
नौरीन माहिरो साहिबा Master of Science in Medical Informatics
शाज़िया नूर चौधरी जी Master of Education in German & Geography at Gymnasium / Lehramt
अना अलवी साहिबा Master of Arts in Religious Science
शाज़िया ख़ान साहिबा Master of Science in Environmental Protection
गज़ाला अहमद साहिबा Master of Education in Economics and German
लोरा मोलीनाज़यटो साहिबा Master of Arts in Governance and Public Policy
फराह जैब ताहिर साहिबा Master of Media Computer Science Informatics
रेहाना फारूक साहिबा Master of Arts in International Marketing
सबा नासिर साहिबा Master of Science in Bio Informatics and System Biology
समीर अरशद साहिबा Bachelor of Arts in Ethnology
हीरा रहमन बट साहिबा Bachelor of Science in Business Informatics
सबीहा बिशारत साहिबा Bachelor of Arts in Religious Studies
नौरीन अहमद साहिबा Bachelor of Arts in Culture Studies
अरूशा अहमद साहिबा Bachelor of Science in International Business Information System
नबीला बुशरा साहिबा Bachelor of Arts in Social Work
फराह शब्बीर साहिबा Bachelor of Arts in Social Work
मंसूरा एहसानुल्लाह साहिबा Bachelor of Arts in Nursing and Health Promotion
श्माइलह मुजफ्फर ख़ाँ साहिबा Bachelor of Science in Psychology
माइमा अहमद साहिबा Bachelor of Arts in Social Work
नादिया चौधरी साहिबा Bachelor of Arts in English / Pedagogy
अनीला सज्जाद अहमद साहिबा Bachelor of Arts in Islamic Studies
ताहिरा भट्टी साहिबा Bachelor of Arts in Teaching
बारिया कमर असलम साहिबा Bachelor of Arts in Extracurricular Education
नोमान कमर साहिबा Bachelor of Arts in Time Based Media
मुनीरा ख़ान साहिबा A-level (Abitur)
तूबा अहमद दुर्रानी साहिबा A-Level (Abitur)
बारिया हिना कमर साहिबा A-Level (Abitur)
इफरा इकबाल साहिबा A-Level (Abitur)
सलमा मुनव्वर अहमद साहिबा A-Level (Abitur)
डॉक्टर सलमा बट साहिबा PhD in Breast Cancer
निदा रियाज़ साहिबा Master of Science in Electrical Engineering
सादिया महमूद साहिबा Master of Science in Chemistry
श्माइलह मदहत बासित साहिबा Master of Science in Medicine and Clinica l Research
ताहिरा मुबश्शर साहिबा Master of Science in Industrial & Organizational Psychology
समीना जावेद जी High School Diploma
अरूशा ज़ाहिद भट्टी साहिबा BBIT (Hons)
अमतुल वदूद बुशरा साहिबा Master of Science in Zoology & Fisheries
सारा अब्दुल सत्तार अहमद साहिबा Master of Science in Organic Chemistry From Baghdad

पुरस्कार वितरण समारोह के बाद 12: 28 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने ख़िताब फ़रमाया।

ख़िताब
हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़

तशह्हुद, तऊज़ और सूर: फातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आजकल कुछ मुसलमानों के कर्म ने इस्लाम को इस तरह पेश किया है कि जो ग़ैर मुस्लिम दुनिया को इस्लाम पर आपत्तियों का मौका मिलता है और जो धर्म विरोधी ताक़तें हैं वे तो और भी बढ़ कर इस्लाम पर हमले करती हैं कहीं चरमपंथी तानाशाह धर्म कहकर इस्लाम को बदनाम किया जाता है तो कहीं मानव अधिकार छीनने के बारे में इस्लाम को बदनाम किया जाता है कहीं महिलाओं के अधिकार अदा न करने का नाम देकर इस्लामी शिक्षाओं पर कोई आक्षेप नहीं करता, और बड़े तरीके से मुसलमानों की भावनाओं को उभारा जाता है कि देखो तुम्हें घर की चार दीवार में रखकर या पर्दे में रख कर तुम्हारी स्वतंत्रता छीनी जाती है जिन को धर्म का अधिक पता नहीं अधिक ज्ञान नहीं रखतीं वे समझती हैं कि वास्तव में हमारे अधिकार अदा नहीं हो रहे हैं और या फिर दूसरा छोर यह है कि प्रतिक्रिया के तौर पर अधिक चरमपंथ महिलाओं में भी आ गई है और कुछ आतंकवादी संगठनों का काम करने का माध्यम औरतें भी बन जाती हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यह अल्लाह तआला का एहसान है कि अहमदी महिलाओं पर कि उन्हें हज़रत मसीह मौऊद को स्वीकार करने की तौफीक़ मिली जिन्होंने इस्लाम की वास्तविक शिक्षा हमारे सामने पेश करी। क़ुरआन और हदीस में स्पष्ट मामलों को खोल कर हमारे सामने रख दिया और फरमाया कि इस्लाम मध्यम मार्ग का धर्म है जो प्रकृति के अनुसार धर्म है, और इस्लाम के हर आदेश का अपने अन्दर एक हिक्मत है इस्लाम जहां पुरुषों के अधिकार की बात करता है तो साथ ही महिलाओं के

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें
नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

अधिकारों के बारे में भी बात करता है। इस्लाम अगर पुरुषों को उनके नेक कर्मों के कारण पुरस्कार और अल्लाह तआला की ख़ुशी का सु-समाचार सुनाता है तो इसी तरह नेक कर्म करने वाली महिला को भी अल्लाह तआला की ख़ुशी और पुरस्कार का सु-समाचार सुनाता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अत: जो कोई कहता है कि इस्लाम ने पुरुष को महिला पर प्राथमिकता दी है वह ग़लत कहता है। इस्लाम कहता है कि घर का खर्च चलाना बीवी बच्चों के खर्च का प्रबन्ध रखना मर्द का काम है और यही उस के कव्वाम (निगरान) होने की निशानी है मर्द का कव्वाम होना औरतों पर रौब डालना और उन पर कठोरता करना नहीं है। अगर महिला काम कर रही है जैसे डॉक्टर है, शिक्षक है या कोई भी काम कर रही है और उसके पति की इच्छा इस के काम में शामिल है तो महिला की कमाई पर पुरुष का कोई अधिकार नहीं है। आदमी ने बहरहाल अपने घर का खर्च चलाना है और वह उसके लिए ज़िम्मेदार है। महिला की ज़रूरतों को भी पूरा करने के लिए ज़िम्मेदार है और बच्चों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए भी ज़िम्मेदार है, चाहे वह महिला काम कर रही हो या न कर रही हो। पुरुष महिला को यह नहीं कह सकता क्योंकि तुम काम कर रही हो इस लिए घर का आधा खर्च तुम भी पूरा करो। यदि महिला अपनी इच्छा से अपने घर पर कुछ खर्च करती है, तो वह उसकी दया है, अन्यथा वह किसी प्रकार भी पाबन्द नहीं कि घर का खर्च करे, घर के खर्च पूरा करे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: पत्नी बच्चों के कपड़े, खाने-पीने, आवास और अन्य आवश्यकताओं को पूरा करना पुरुष या पति का काम है। हाँ इस्लाम यह औरत को कहता है कि जब पुरुष की यह ज़िम्मेदारी है कि वह अपनी पत्नी और बच्चों के सभी जरूरतों का ख्याल रखे तो महिला को अपनी पहली प्राथमिकता घर की देखभाल और बच्चों के प्रशिक्षण पर रखनी चाहिए। जब कोई व्यक्ति पुरुष हो या महिला कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करता है जैसे डॉक्टर है इंजीनियर है शिक्षक है आदि आदि तो उनकी इच्छा भी होती है और रुचि भी कि इस पेशे में काम भी करें ताकि इस में और अधिक अनुभव प्राप्त हो, अपने कौशल को चमकाने का अवसर प्राप्त करें हम यह नहीं कह सकते कि एक महिला की इच्छा को शिक्षित होने के बाद अपने पेशे में महारत हासिल करने और प्रदर्शित करने की नहीं होती। लेकिन इस इच्छा के बावजूद मैं कई अहमदी महिलाओं को जानता हूँ जो डॉक्टर हैं और अपने क्षेत्र में उन्होंने स्पेशलाईज़ भी किया हुआ है लेकिन शादी के बाद अपने काम इसलिए छोड़ दिए कि उन्होंने बच्चों की देखभाल और प्रशिक्षण को इस व्यावसायिक रुचि से अधिक महत्वपूर्ण माना और जब बच्चे बड़े हो गए तो उन्होंने फिर अपनी क्षेत्र में काम करना शुरू कर दिया और ऐसी माताओं के बच्चे धार्मिक आधार से और सांसारिक लिहाज़ से भी प्राय: बहतरीन बच्चे होते हैं और अन्य मनोवैज्ञानिक समस्याओं से भी आज़ाद रहते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अत: ये माताएं हैं जिन्होंने इस इस्लामी आदेश को समझा कि तुम्हारा मूल काम अपनी और क़ौम की नई नस्ल की बेहतरीन प्रशिक्षण कर के इन्हें क़ौम के लिए अच्छा निवेश बनाना है। उन्हें समाज का सबसे अच्छा हिस्सा बनाना होगा। महिला की प्रकृति में अल्लाह तआला ने यह गुण रखा है कि वे धैर्य और सहनशीलता से बच्चे की परवरिश कर सकती है। इस का विवरण पिछले साल के जलसा में बयान कर चुका हूं और यह भी अल्लाह तआला ने मानव प्रकृति में रखा है कि बच्चे माओं की तुलना बहुत अधिक प्रभावित होते हैं। माताओं की बातों को अधिक महत्तव देते हैं अत: कुछ साल पहले, एक जांच हुई थी कि 13 वर्ष की उम्र माता तक माता से ज्यादा प्रभावित होते हैं। माताओँ की बातों को अधिक महत्तव देते हैं और अधिक सही समझते हैं। पिताओं को इस के मुकाबले में कम महत्तव देते हैं बाद में बच्चे जवान होना शुरू होते हैं तो विशेष रूप से लड़कों की तो बापों की तरफ प्रवृत्ति बढ़ती जाती है क्योंकि लड़कों का बाहर जाना और अन्य खेल कूद में रुझान अधिक होता है। इसी तरह कुछ पिता अपनी पत्नी की ज़िद में आकर जब आपस में मतभेद शुरू हो जाते हैं तो बच्चों की ग़लत इच्छाओं को पूरा करने लग जाते हैं और यह बात उस समय होती है जैसा कि मैंने कहा जब पति पत्नी में मतभेद शुरू हो जाते हैं, बापों को यह पता नहीं लगता है कि वे अपनी नस्ल को ऐसे लाड से नष्ट कर रहे हैं। यह तो मेरा भी अनुभव है और कई मामले मेरे सामने भी आए जब घरों में पत्नियों में मतभेद हो जाते हैं अलग हो जाते हैं पिता केवल बच्चों को अपनी तरफ खींचने के लिए समय बर्बाद करने वाली गेमज़ बच्चों को ख़रीद कर दे देते हैं और जब माताएं बच्चों को समझाएं तो फिर बच्चे बापों को बताते हैं और ऐसे अगर वह अभी रिश्ता है और केवल मतभेद ही हैं तो घरों में लड़ाई और फसाद बढ़ते चले जाते हैं और अगर संबंध स्थापित नहीं और अलग हो चुके हैं तो फिर बच्चे दोहरा जीवन गुज़ार रहे होते हैं। उन्हें समझ नहीं आती कि क्या सही और क्या ग़लत है। बहरहाल यह भी मेरा अनुभव है कि एक उम्र तक पहुँच कर जब बच्चों में चाहे वह लड़के हों या लड़कियां कुछ बुद्धि आती है तो बच्चे फिर माँ के समर्थन और बापों की ज्यादतियों की शिकायत भी करते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: तो इस्लाम ने मानव प्रकृति के इस पहलू को सामने रखते हुए महिला और पुरुष को कह दिया कि अगर अपनी पीढ़ियों का सही प्रशिक्षण चाहते हो और उन्हें समाज का सबसे अच्छा हिस्सा बनाना चाहते हो तो पुरुष अपनी जिम्मेदारियां संभालें और महिलाओं को अपनी जिम्मेदारियों को संभालना होगा। दोनों ही एक दूसरे के अधिकारों का अदा करने की कोशिश करते हैं और बच्चों के अधिकारों को अदा करने की भी कोशिश करते हैं, ताकि तुम क़ौम की सर्वश्रेष्ठ पूंजी बन सको। यदि महिलाएं घरों में अपने कर्तव्यों को अदा करने के स्थान पर पैसे कमाने के शौक में नोकरियां करती रहेंगी और जब बच्चे स्कूल से घर आएंगे, तो उन की अनदेखी हो रही होगी, उन्हें पता नहीं होगा कि कहां वे अपने आराम को तलाश करें। माताएं जब तक थक के घर आएंगी तो ज़ाहिर है कि जल्दी-जल्दी खाना तैयार करने की चिंता में होंगी या और अन्य काम करने की चिंता में होंगी और बच्चों को सही तरह समय नहीं दे सकेंगी और यही बात कई बच्चों में चिंता का कारण बन रही होती हैं जैसे जैसे शिक्षा सामान्य हो रही है, इस तरफ प्रवृत्ति बढ़ रही है। शिक्षित लड़कियां समझती हैं कि शादी के बाद हमारा कर्तव्य है कि हम ज़रूर काम करें। अच्छी तरह से काम करें लेकिन जैसा कि मैंने कहा, बच्चों का प्रशिक्षण पहला कर्तव्य है। बहरहाल बच्चों में ये बातें चिंता का कारण बन रही होती हैं चाहे वे इसे व्यक्त करते हैं या नहीं, लेकिन उम्र के साथ साथ इस चिंता का मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी दिखाई देता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अत: अल्लाह तआला ने कुरआन करीम में महिलाओं को इस ओर ध्यान दिलाया है यह कहकर कि तुम में से सबसे अच्छी महिलाएं वे हैं सालेहात और कानतात और ग़ैब की हिफाज़त करने वाली हैं। नेकियों में बढ़ने वाली हैं। दुनिया की इच्छाएं उनका लक्ष्य नहीं हैं, परन्तु उनका उद्देश्य यह है कि वे स्वयं अल्लाह तआला के आदेशों पर चलते हुए अच्छे कर्मों को करने वाली हों और बच्चों का भी उचित प्रशिक्षण कर के उन्हें सालेह बनाने वाली हों। फिर ग़ैब में भी इन चीजों की रक्षा करने वाली हों, जिन की सुरक्षा की अल्लाह तआला ने ताकीद की हुई हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अल्लाह तआला ने औरत को जिन बातों को करने की ताकीद फरमाई है उन में से एक बच्चों की तरबियत है। हदीस में आता है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि पत्नी अपने पति की निगरान बनाई गई है वह उसकी अनुपस्थिति में उसके घर और बच्चों की रक्षा के लिए ज़िम्मेदार है और बच्चों की रक्षा कैसे हो सकती है, यह सवाल है। यह बच्चों के सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षण द्वारा ही की जा सकता है अगली नस्ल की सबसे अच्छी नस्ल के रूप में मैंने कहा था कि इस्लाम यदि मर्द को सभी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए ज़िम्मेदार बनता है, तो महिला को यह भी कहता है कि तुम भी अपने बच्चों के प्रशिक्षण की ज़िम्मेदारी अदा करो, तो कहां से यह परिणाम निकला , इसका नतीजा यह हुआ कि उसके अधिकारों को छीन लिया गया या घर में रखा जा रहा है। जब मर्द को महिला के अधिकार अदा करने के लिए ज़िम्मेदार बनाया जा रहा है, और कहा जाता है कि वह काम के कारण बच्चों का सही हक अदा नहीं कर सकता, तो फिर महिला बच्चों के अधिकार अदा करे, और अल्लाह तआला ने औरत की प्रकृति में बच्चों की देखभाल सही रंग में रखने की क्षमता रखी है। यदि महिला कहती है कि मुझे अपने अधिकार का उपयोग करना है और सारा दिन घर से बाहर रहना है, तो बच्चों के अधिकार कौन अदा करेगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इसलिए, इस्लाम कहता है कि आपस में पारस्परिक सहमति से काम बांट लो। प्रत्येक अपने अपने काम को बांट ले और ज़िद में आकर बच्चों को उन के हक से वंचित न करो। अपने हक लेने के लिए बच्चों को उन के अधिकार से वंचित न करो। अत: यह आपत्तिजनक बात नहीं है बल्कि आदरणीय शिक्षा है अत: अहमदी माताओं को किसी प्रकार के शिक्वे की ज़रूरत नहीं है बल्कि उन्हें ख़ुश होना चाहिए कि अहमदी माताओं की पवित्र गोदें पवित्र ख़ज़ाने हैं और ख़ज़ाने रखने की जगह हैं और उनमें पलने वाले बच्चे पवित्र माल और नेक प्रशिक्षण की वजह से अल्लाह तआला के पसंदीदा माल हैं। तो कौन ये पवित्र माल बनाना और लेना पसंद नहीं करेगा? अत:

उठें और अपने पवित्र माल से ख़ज़ाने भरती चली जाएं बजाय इस के की ज़िदों में आकर मुकाबलों में आकर बच्चों के अधिकार अदा करना छोड़ दें और उन को उन के हक से वंचित कर दें। दुनिया को न देखें कि यह कुछ दिन की दुनिया है। दुनिया के कुछ दिनों के जीवन के पीछे दौड़ने के स्थान पर उस दुनिया के जीवन को हासिल करने की कोशिश करें, जिस से इस दुनिया की ज़िन्दगी जन्नत बनती है, और भविष्य का जीवन भी अनन्त स्वर्ग बनाता है। देखें आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अच्छी पत्नियों और अच्छी माताओं को क्या स्थान दिया है। आप ने फरमाया जमा करने वाला माल सोना चांदी नहीं है यह न समझो कि तुम ने माल सोना चांदी जमा कर लिया तो बड़ा कमाल कर लिया। फरमाया बल्कि सबसे बेहतर माल ज़िक्रे इलाही करने वाली ज़बान है और शुक्र करने वाला दिल और मोमिना पत्नी है जो उस के धर्म पर उस की मददगार होती है। मानो पति को धर्म पर चलाने के लिए मोमिना बीवी ही काम आती है, जो धर्म की सेवा करने वाले हैं।इन की सहायक भी मोमिना बीवी ही होती है अत: जहां आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह फरमाना पुरुषों और महिलाओं दोनों को इस बात की ओर ध्यान दिलाता है कि अगर ख़ज़ाने जमा करने हैं जो इस दुनिया में काम आएंगे और अगली दुनिया में भी काम आएंगे तो अपनी ज़ुबानों पर ज़िक्रे इलाही जारी रखो। अल्लाह तआला के फज़ले पर अपने दिल में शुक्रगुज़ारी की भावना पैदा करो। इस बात पर प्रत्येक समय कुड़ते न रहें कि अमुक के पास अधिक माल है और उस के पास रूपया अधिक है और हमारे पास कम है अमुक का घर बड़ा है और हमारा छोटा है अमुक के पास उस प्रकार और नए माडल की कार है और हमारे पास नहीं हैं, और महिलाएं ये न देखें कि अमुक के पास सोने के इतने गहने हैं और हमारे पास ऐसा नहीं है। हमारे पति हमें नहीं बना कर देते हैं। अगर पतियों को गुंजाइश है तो ज़रूर पत्नियों की इच्छा पूरी करनी चाहिए लेकिन अगर उधार लेकर और ऋण में डूब कर इच्छा पूरी करनी है तो यह नेक महिला की निशानी नहीं है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अत: मूल बात यह है कि धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देने के वादा को हमेशा याद रखें। आप में से कई हैं जिनके पूर्वजों ने धर्म स्वीकार किया अहमदियत स्वीकार की और कुरबानियां दीं। आप ने उसे याद रखना है यदि आप भूल गईं तो अपना धर्म भी नष्ट करेंगी और आपके बच्चों का धर्म भी नष्ट करेंगी। आप जो पाकिस्तानी हैं इनमें से अधिकांश इन में से अपने देश से इसलिए निकाली गई हैं और यहाँ आकर आबाद हुईं हैं कि आप के बाप दादा या आप लोग ख़ुद यहाँ आए कि आप ने तथाकथित मुल्लाह के धर्म का पालन नहीं किया बल्कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश को समझते हुए और स्वीकार करते हुए ज़माने के इमाम और मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को स्वीकार न कि मुल्ला के धर्म को और न मुल्ला से भय खाया। इसलिए आप को वहाँ से देश छोड़ना पड़ा वरना क्या विशेषता है आप में और क्या हक है उन अहमदियों का जो यहाँ आकर शरण लेते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: " आप का जो जर्मनी में आ कर आबाद होना है वह किसी विशेष विशेषता के कारण नहीं है। आपकी किसी उच्च गुणवत्ता के कारण नहीं बल्कि धर्म के कारण है। जब यह धर्म के कारण है, तो इसे हमेशा याद रखना चाहिए। इस क़ौम ने अहमदियों को केवल इसलिए जगह दी है कि हमें अपने देश में धार्मिक स्वतंत्रता नहीं थी अत: इस बात को मर्द भी और औरतें भी याद रखें। अगर धर्म पर स्थापित नहीं रहते तो फिर हम उन लोगों को धोखा देने वाले बनते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अल्लाह तआला सब को तौफ़ीक़ दे कि अपने कथन से से भी और अपने कर्म से भी यह साबित करें कि जो धर्म आप मानने वाले हैं वह सच्चा धर्म है और आप के अधिकार की रक्षा करता है। दुनिया को इस्लाम की अच्छाइयां बताएं ताकि दुनिया जाने कि दुनिया की मुक्ति ख़ुदा तआला के आदेशों पर चलने और उस पर ईमान लाने में है न कि सांसारिक शोर में डूब कर धर्म को बिल्कुल भूल जाने में है। अल्लाह तआला को भूल जाने में है अल्लाह तआला आपको सही मार्गदर्शन की तौफीक प्रदान फरमाए और अपना व्यावहारिक नमूना दिखाने की आप को शक्ति प्रदान करे। दुआ कर लें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ का ख़िताब 1 बज कर 15 मिनट तक जारी रहा। इसके बाद लजना और नासरात के विभिन्न ग्रुपों समूहों ने अफ्रीकी, अरबी, उर्दू, जर्मन, अंग्रेज़ी, स्पैनिश, तुर्की और बोज़नीन भाषाओं में दुआ की कविताएं और तराने पेश किए। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ कम उम्र वाले बच्चों के हॉल मैं भी गए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ को अपने मध्य पाकर बच्चों और माओं की ख़ुशी की कोई सीमा न रही थी। यहाँ भी नज़में और तराने प्रस्तुत किए गए और महिलाओं ने नारे लगाए। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ मर्दाना जलसा गाह में 1 बज कर 40 मिनट पर आए और नमाज़ ज़ुहर असर जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

कार्यक्रम के अनुसार 4 बजे सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ जर्मन और दूसरी विभिन्न क़ौमो से संबंध रखने वाले मेहमानों के साथ एक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए मर्दाना जलसा गाह में तशरीफ़ लाए। यह कार्यक्रम कुछ समय पहले से इन मेहमानों के साथ जारी था। इस कार्यक्रम में शामिल मेहमानों की संख्या 779 थी। जर्मनी के विभिन्न शहरों से आने वाले मेहमानों की संख्या 203, अरब मेहमानों की संख्या 227, एशियाई देशों से संबंध रखने वाले मेहमानों की संख्या 171, अफ्रीकी मेहमानों की संख्या 26 जबकि जर्मनी के अलावा अन्य विभिन्न यूरोपीय देशों नीदर लैंड, स्पेन, फ्रांस, बेल्जियम, स्विस , बुल्गारिया, मेसीडोनिया, अल्बानिया, कोसोवो, बोज़निया, हंगरी, क्रोएशिया, लिथुआनिया, स्लोवेनिया, लातोया और एस्टोनिया से आने वाले मेहमानों की संख्या 190 थी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के आगमन के बाद, कार्यक्रम कुरआन की तिलावत के साथ शुरू हुआ। जर्मन अनुवाद इस के बाद प्रस्तुत किया गया था। इस के बाद 4 बज कर 7 मिनट पर ज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने अंग्रेज़ी भाषा में ख़िताब फ़रमाया।

जर्मन मेहमानों से हुज़ूर अनवर का ख़िताब

तशह्हुद तऔज़ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया

सम्मान्नीय मेहमान !

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहो।

आप सब पर अल्लाह तआला की सुरक्षा और दया हो। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "इस में कोई शंका नहीं कि हम एक कठिन दौर से गुज़र रहे हैं। अगर हम आज की दुनिया को उचटती नज़र से देखें, तो हम हर तरफ बढ़ती हुई ईर्ष्या, विकार और चिंता देखेंगे। ऐसा लगता है कि दुनिया के अधिकांश लोग इस अंतिम परिणाम तक पहुंच चुके हैं कि इस दुनिया में अस्थिर होने के लिए इस्लाम ज़िम्मेदार है। मुझे नहीं लगता कि यह कहना सही है कि केवल मुसलमान ही दुनिया भर में उपद्रव की शोलों को हवा दे रहे हैं। इसके बावजूद यह बहुत खेद का कराण है कि कुछ तथाकथित मुस्लिम समूहों ने लगातार विश्व शांति को नष्ट कर दिया है और घृणा फैलाकर और बेहद घिनौने ज़ुल्म दिखाकर ग़ैर मुस्लिम वर्गों में भय और शंका का माहौल फैलाया है। निश्चित रूप से, इस तथ्य को व्यक्तिगत रूप से मानने में मुझे कोई हिचक नहीं है कि ऐसे मुसलमानों ने भ्रष्टाचार और समाज में भेदभाव बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसकी एक बड़ी वजह यह है कि चरमपंथी गुट और उलमा ने असहाय मुसलमानों को अपना शिकार बनाया है और गुमराह लोगों को हिदायत की तरफ लाने की बजाय उन्होंने उन के दिमाग़ों को चरमपंथ के ज़हर से भर दिया और उन्हें कट्टरपंथी बना दिया। दुर्भाग्य से कुछ के मन में यह ज़हर इस हद तक भरा गया कि उन्होंने अत्यंत भयानक अत्याचार किए जबकि कुछ दूसरे जिन्होंने ऐसे हमले तो नहीं किए लेकिन फिर भी वह इसी प्रकार शैतानी विचारों को मानने वाले हैं। इसके साथ हम काफी समय से देख रहे हैं कि कुछ मुसलमान सरकारें अपनी जनता से बुरा व्यवहार कर रही हैं और उनके सरकारों ने जनता से बहुत अत्याचार और अन्याय किए हैं जिसके परिणाम में मतभेद पैदा हुए जो अंतत: भयावह युद्धों पर समापन हुआ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इसके बावजूद यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो जानी चाहिए कि इससे कोई फर्क नहीं

पड़ता कि आतंकवादी क्या दावा करते हैं, सभी आतंकवादी और चरमपंथ की घटनाएं चाहे समूहों द्वारा हों या आतंकवादी लोगों की तरफ से हों, चाहे पश्चिमी देशों में हों या मुस्लिम देशों में, वे सब इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं के विरुद्ध हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इस्लाम की शिक्षाएं बिना किसी संदेह के लोगों के लिए शांति और सुरक्षा का साधन हैं। इन शिक्षाओं की बुनियाद सहानुभूति, प्रेम और मानवता पर है और यही वह चरित्र हैं जिन पर जमाअत अहमदिया ईमान रखती है और पिछले सवा सौ साल से दुनिया में इन चरित्रों के प्रसार के लिए स्थायी कोशिश कर रही है। अत: मैं कहूंगा कि इस्लाम किसी भी तरह के अन्याय और अत्याचार को किसी भी प्रकार की आज्ञा नहीं देती। अत: आरम्भ से इस्लामिक शिक्षाओं ने विभिन्न राष्ट्रों में मतभेद पैदा करने के स्थान पर मानव जाति को एकजुट किया है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: वास्तव में कुरआन, जिस पर मुसलमान विश्वास करते हैं कि यह अल्लाह तआला की वाणी है जो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उतरी। उसकी पहली सूरत में आता है कि "अल्लाह तआला सारी दुनिया का रब्ब (प्रतिपालक) है। अर्थात अल्लाह तआला सिर्फ मुसलमानों का ख़ुदा नहीं है बल्कि वह ईसाइयों, यहूदियों और सभी धर्मों के मानने वालों का भी ख़ुदा है और उनका भी ख़ुदा है जो किसी धर्म को नहीं मानते और न ही ख़ुदा तआला की तौहीद पर विश्वास रखते हैं। अत: अल्लाह तआला सारी मानव जाति का आक़ा है और वह सबसे दयालु है, और उसने अपनी दया बिना रंगों और धर्मों के भेद के नाज़िल फरमाई है। इस कारण से, कुरआन करीम में जो अरबी शब्द प्रयोग हुआ है वह "रबुबल अलेमीन" है। अल्लाह तआला ने यहां "आलम" शब्द का प्रयोग किया है, जिस का अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद word किया जाता है। हालांकि कोई भी अनुवाद अस शब्द का वास्तविक रंग में भाव अदा नहीं कर सकता। यह शब्द "आलम" एक बहुत गहरे अर्थ रखने वाला शब्द है। इस शब्द का प्रयोग करके अल्लाह तआला ने स्पष्ट किया है कि अल्लाह तआला किसी विशेष धर्म या किसी विशेष समय का ख़ुदा तआला नहीं है, बल्कि वह दुनिया के सभी देशों और धर्मों का रब्ब है। तो ये शब्द ज्ञान और हिक्मत से परिपूर्ण हैं ये शब्द वैश्विक समानता के सिद्धांतों को अपने अन्दर समेटे हुए हैं और स्पष्ट रूप से बताते हैं कि इस दुनिया में किसी भी जातीय या राष्ट्रवादी समुदाय के लिए कोई स्थान नहीं है। ये शब्द स्पष्ट करते हैं कि अल्लाह तआला के गुण किसी विशेष राष्ट्र और जाति तक सीमित नहीं हैं, बल्कि बनि किसी भेदभाव के सब के लिए उपलब्ध हैं। ये इस्लाम की सच्ची शिक्षाएं हैं, लेकिन फिर भी दु:ख की बात है कि हमें यह कहना पड़ता है कि जातिवाद और भेदभाव आज दुनिया में फैले हुए हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: वास्तव में जो लोग इस्लाम पर अन्यायपूर्ण ढंग से यह आरोप लगाते हैं कि यह ग़ैर मुसलमानों से भेदभाव बरतता है वह ख़ुद भी इस आरोप का दोषी बनते हैं। उदाहरण के लिए, हाल ही में एक अमेरिकी राजनेता ने कहा है कि गोरों ने मानव सभ्यता में अन्य पीढ़ियों जैसा कि कालों और एशियाई लोगों की तुलना में बहुत अधिक हिस्सा डाला है। इस के साथ यह रिपोर्ट भी आई है कि एक अन्य अमेरिकी वरिष्ठ नीति निर्माता ने कहा है कि गोरे दूसरों से ज्यादा सहनशील हैं। इस तरह के अतिवादी विश्लेषणों से अन्य देशों और नस्लों में केवल निराशा और ना उम्मीदी पैदा होती है। इस के विपरीत इस्लाम, यह दावा करता है कि सभी लोग बिना रंग तथा नस्ल के अन्तर के आज़ाद पैदा हुए हैं। इस्लाम यह सिखाता है कि एक क़ौम दूसरे से बेहतर नहीं है, न ही किसी क़ौम के आदमी भी अन्य क़ौम के लोगों की तुलना में अधिक बुद्धिमान हैं और यह कि अल्लाह तआला ही सभी का रब्ब है। अलबत्ता यह बात सच है कि इंसान दुनिया में जितनी प्रगति कर सकता है इसका दारोमदार उसकी परिवेश और व्यक्तिगत कोशिश होती है लेकिन बुनियादी कौशल हर इंसान को बिना भेदभाव नस्ल और क्षेत्र के बराबर दिए गए हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ फरमाया: आज से चौदह सौ साल पहले आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने एक महान ख़िताब जिसे "ख़ुत्बा हज्जतुल विदा" के नाम से याद किया जाता है, इस में भी यही विषय उल्लेख किया। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुनिया में शांति की नींव रखी। इस भाषण के शब्द जितने प्रेरणादायक हैं, उतने अनश्वर और अनन्त हैं। हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने घोषणा की कि सभी इंसान समान हैं, न गोरे को काले पर कोई प्राथमिकता दी गई है और न ही काले पर गोरे को। इसी प्रकार आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: न अरब वाला अजम वाले पर कोई प्राथमकिता जताए और न अजम वाला अरब वाले पर। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मानवाधिकारों की व्यापक मशाल को लहराते हुए एलान फरमाया था कि सभी इंसान बराबर पैदा होते हैं और उनके समान अधिकार हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया नि:सन्देह आज जबकि इस्लाम के विषय में बहुत सी ग़लत फहमियां पैदा हो चुकी हैं तो इस उज्ज्वल नियम को दोहराने की बहुत ज़रूरत है जिससे साबित होता है कि इस्लाम सभी प्रकार के भेदभाव और पूर्वाग्रह के ख़िलाफ है। अल्लाह तआला ने हमें शारीरिक और मानसिक क्षमताओं से बराबर नहीं बनाया है, परन्तु हमारा विश्वास है कि ख़ुदा तआला ने हमारे आध्यात्मिक विकास के लिए मानव जाति को मुक्ति का मार्ग दिया है। धार्मिक शब्दों में इस्लाम कहता है कि अल्लाह तआला ने दुनिया के सभी देशों में रसूल भेजे हैं और मुसलमानों को नबियों का सम्मान करने का आदेश दिया है। यही कारण है कि हम सभी धर्मों की संस्थापकों को बहुत ही सम्मानजनक तरीके से देखते हैं और किसी के विरुद्ध कोई बात करने का सोच भी नहीं सकते। बेशक, सच्चा मुसलमान किसी भी पैग़म्बर या सम्माननीय हस्ती के बारे में बुरा नहीं बोल सकता, चाहे इस्लाम के विरोधी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान में बहुत अधिक गुस्ताख़ी करने वाले हो। इसमें कोई शक नहीं कि जब हम दूसरों को अपने प्यारे नबी की शान में अन्याय गुस्ताखयाँ करते सुनते हैं तो हमें बेहद बेचैनी होती है और हमारे दिल बहुत अधिक घायल हो जाते हैं, लेकिन हम इस प्रतिक्रिया में कभी दूसरे धर्मों के रसूलों और बुज़र्ग हस्तियों की शान में गुस्ताख़ी नहीं करेंगे और दूसरे धर्म वालों के विरुद्ध नहीं बोलेंगे बल्कि इस से बढ़ कर इस्लाम कहता है कि जैसा कि। सूरत अनआम की आयत 109 में है कि मुसलमान बुतों की पूजा करने वालों के बुतों को भी बुरा न कहें क्योंकि इस से वह अपनी अज्ञानता के कारण ग़ुस्सा में आ जाएंगे और अल्लाह तआला को भी बुरा भला कहेंगे और नि:सन्देह इस से मुसलमानों की भावनाओं को आघात पहुंचेगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: कुरआन घृणा के एक अंतहीन क्रम को समाप्त करने के लिए जो अंतत: दुश्मनी और अत्याचार पर समापत होता है, मुसलमानों से कहता है कि वह धैर्य दिखाएं और हर समय उच्च नैतिकता का प्रदर्शन करें। इसी तरह कुरआन में सूरे आले इमरान की आयत नंबर 65 भी धार्मिक सहिष्णुता और सहनशीलता का आधार रखती है। इस आयत में आता है कि सभी धर्मों के लोग केवल विशेष रूप से किताब वाले ख़ुदा तआला की हस्ती के बारे में संयुक्त विश्वासों के आधार पर इकट्ठे हों। इसलिए कुरआन मानव जाति को समान मूल्यों पर एक साथ जुड़ने और अपने मतभेदों को पीछे डालने की शिक्षा देता है। यहां कुरआन मजीद यह भी बताता है कि जहां यह गैर मुसलमानों पर है कि वह इस आदेश को मानें या न मानें वहाँ मुसलमानों का यह कर्तव्य है कि वह हर हाल में दूसरों के विश्वासों का सम्मान करें और उनके लिए अपने दिल खुले रखें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: एक और आरोप जो अक्सर इस्लाम पर लगाया जाता है वह यह है कि इस्लाम दूसरों को मुसलमान बनाने के लिए उत्पीड़न और हिंसा की अनुमति देता है। यह भी निराधार ग़लत आरोप है बल्कि इसके विपरीत कुरआन ने सूर: बक़रा आयत 257 में बिना शर्त घोषणा की है कि ईमान और धर्म के मामले में किसी प्रकार की कोई बाध्यता नहीं है। इस्लाम दावा करता है कि यह सार्वभौमिक और परिपूर्ण धर्म है और इसका आवश्यक घटक है कि धर्म मानव के हृदय का मामला है। इसलिए कोई भी कभी भी किसी को मुस्लिम बनाने के लिए उत्पीड़न नहीं कर सकता। सूर: यूनुस की आयत नंबर 100 में अल्लाह तआला अधिक फरमाता है कि यद्यपि अल्लाह तआला को ही सामर्थय है कि वह सारी मानव जाति को मुसलमान बना दे लेकिन अल्लाह तआला ने लोगों को पूरा अधिकार दे रखा है कि वह भरपूर स्वतंत्रता और बिना किसी दबाव के अपना रास्ता अपनाएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अत: वह ख़ुदा जिसकी हम इबादत करते हैं वह तानाशाह नहीं है और न वह यह मांग करता है कि सारी मानव जाति उसकी तरफ झुके बल्कि वह एक ऐसी भव्य हस्ती

है जो प्रत्येक को अधिकार देती है कि अपनी इच्छा के अनुसार अपनी आस्था को चुनो। इस का यह मतलब हरगिज़ नहीं कि मुसलमान अपने धर्म की तब्लीग़ न करें बल्कि इसके विपरीत अल्लाह तआला सभी मुसलमानों को निर्देश देता है कि वह दूसरों तक इस्लाम का संदेश पहुंचाऐं लेकिन यह तब्लीग़ शांति के तरीके पर धीरज और मुहब्बत एवं प्यार की भवाना और आपसी सम्मान पर आधारित होनी चाहिए इसलिए कुरआन सूर: कहफ़ आयत 30 में बयान फरमाता है कि मुसलमानों का कर्तव्य है कि वह मानव जाति को बताएँ कि इस्लाम अल्लाह तआला की तरफ से एक सच है और प्रत्येक स्वतंत्र है चाहे तो उसे स्वीकार करे और चाहे तो इनकार करे। इसलिए, इस भावना के साथ, किसी व्यक्ति को शांति पर इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं से अवगत कराएं और एक ख़ुदा तआला को पहचानें। इसलिए हम प्यार और सहानुभूति से लोगों के दिल और मन को जीतना चाहते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: कुरआन सूर: यूनुस आयत 26 में अधिक वर्णन करता है कि अल्लाह तआला शांति के घर की तरफ़ दावत देता है। इस आयत से इस सिद्धांत को मज़बूती मिलती है कि हर इंसान स्वतंत्र है चाहे इस्लाम की शिक्षाओं को स्वीकार करे या इनकार करता है। यह आयत हमें बताती है कि अल्लाह तआला सभी मानव जाति को शांति और सुरक्षा की तरफ बुलाता हैं। अत: जब अल्लाह तआला मानव जाति को शांति गृह में कहते हैं तो मुसलमानों को शांति और सभी अन्य लोगों के लिए सुरक्षा का स्त्रोत बनना होगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मैंने कुरआन के कुछ आयत वर्णन की हैं जो पूरी तरह से इस अवधारणा को झूठा प्रमाणित करती हैं कि नऊज़ बिल्लाह इस्लाम एक ऐसा धर्म है जो ग़ैर मुसलमानों के अधिकार छीन लेता है और समाज की शांति और कल्याण को बर्बाद करता है फिर कुरआन ने सूर: अल-कसस आयत 58 में इस तथ्य को वर्णन किया है कि सच्चा इस्लाम हमेशा शांति से ही फैला है और यह कोई नई बात नहीं है जो हम दावा कर रहे हैं। इस आयत में उन लोगों की तरफ इंगित किया गया है जिन्हें आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुहम्मद के युग में इस्लाम का संदेश मिला था लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया इस आयत में इसका उल्लेख है कि इसके कारण भौतिक हैं, न कि आध्यात्मिक। इन लोगों ने अपने आप स्वीकार किया कि उन्हें डर है कि अगर उन्होंने इस संदेश को स्वीकार कर लिया तो उन्हें अपनी संपत्तियों से वंचित होना पड़ेगा और उनके अपने लोग उनसे सम्बंध विच्छेद कर लेंगे। ये लोग मुसलमानों से डरते नहीं थे क्योंकि इस की सुन्दर शिक्षा को अनुभव किया था, बल्कि वे अपने शासकों और लोगों से डरते थे। यह बात इस तथ्य पर मुहर सत्यापित करती है कि इस्लाम धर्म के संस्थापक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा रज़ियल्लाहो अन्हुम ने इस्लाम का संदेश हमेशा शांति से फैलाने की कोशिश की और कभी भी किस प्रकार के दमन व उत्पीड़न का उपयोग नहीं किया। इससे साबित होता है कि वह इस्लाम जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सिखाया और जिस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अनुकरण कर के दिखाया वह चरमपंथ और अत्याचार की शिक्षाओं पर आधारित नहीं था और ग़ैर मुस्लिम बिना किसी सज़ा के डर से उसका इनकार कर सकते थे । यदि वे किसी से डरते हैं, तो वे अपने स्वयं के ग़ैर-मुस्लिम नेता और कबीले थे, जो उन्हें इस्लाम की शांतिपूर्ण शिक्षाओं को स्वीकार करते हुए सहन नहीं कर सकते थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया इस के और अधिक आप के सामने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मक्का फतह के अवसर पर अभूतपूर्व नमूना रखना चाहता हूं।

मक्का आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपना शहर था परन्तु नबुव्वत के दावा के बाद 13 साल तक आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के सहाबा रज़ि अल्लाह अन्हुम को औरमुसलमानों को यातना दी गई थी। मुसलमानों को कष्टों का सामना करना पड़ा था। मुसलमानों पर अत्याचार किया गया था। यहां तक कि ख़ुद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर हमले किए गए जैसा कि उन के प्यारों पर किए गए थे और अन्त में उन को उन के घरों से निकाल दिया गया। और उन्हें हिजरत करनी पड़ी। इस के बावजूद जब आप विजेता के रूप में मक्का में लौट आए और सारा शहर आपके अधीन था, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पहली घोषणा यह थी कि आज उन लोगों से कोई बदला नहीं लिया जाएगा, जिन्होंने पिछले वर्षों में मुसलमानों को क्रूर हिंसा से पीड़ित किया था। इस महान विजय के अवसर पर, आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने महान नम्रता और धैर्य दिखाते हुए यह घोषणा की कि इस्लाम की अमन वाली शिक्षा की दृष्टि से इन सब को जिन्होंने मुसलमानों को कष्ट पहुंचाया तुरंत माफ किया गया है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया ये बातें जो मैंने अभी वर्णन की हैं उन के प्रकाश में मुझे बहुत आशा है और मेरी दुआ है कि जल्दी करने और दूसरों की सुनी हुई बातों में आकर इस्लाम के बारे में यह फैसला करने का कि इस्लाम अत्याचार का धर्म है और अपनी बुद्धि का प्रयोग करते हुए इमानदारी के साथ सोचेंगे कि इस्लाम वास्तव में किस बात की ओर इशारा करती है। तब ही वे समझ सकेंगे कि नफरत फैलाने वाले कदम जो पिछले सालों में इस्लाम के नाम पर किए गए इन का इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से कोई संबन्ध नहीं है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया "यह बहुत अनुचित है कि इस्लाम या किसी भी धर्म को ऐसे लोगों के दुनाहों के लिए दोषी ठहरा दिया जाए, जो अपनी धार्मिक शिक्षाओं के विरुद्ध पालन करते हैं। दुनिया में अधिकांश हथियार जो देश तय्यार करते हैं मूल रूप से ईसाई देश हैं और वे दुनिया के विभिन्न हिस्सों में निर्दोष लोगों को मारने और क्रूर संघर्षों को जन्म देने का कारण हैं, तो क्या यह आरोप सच होगा कि ईसाई धर्म इन ख़तरनाक हथियारों की दौड़ के लिए ज़िम्मेदार है? बिल्कुल नहीं ! इसी प्रकार मैं यह भी नहीं मानता कि दुनिया में फैले हुए फसाद का कारण केवल मुसलमान हैं इसलिए मुझे आज्ञा दें कि मैं इस को अधिक स्पष्टीकरण कर सकूं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: हम बीसवीं सदी में दो महान युद्धों के ख़तरनाक परिणामों को देख चुके हैं। जिस में लाखों लोगों की मृत्यु हो गई और अनगिनत लोगों के जीवन को नष्ट कर दिया गया। ये महान युद्ध मानव इतिहास के दर्दनाक हकीकत हैं और यह बहुत दु:ख की बात है कि दुनिया ने पिछली गलतियों से नहीं सीखा है और अब मनुष्य दोबारा ख़तरनाक घाटी की कगार पर फिर से खड़ा है। शांति के लिए पारस्परिक समझ और आपसी सम्मान के साथ वार्ता के मार्ग को अपनाने के बजाय, विश्व शक्तियों ने भय का रास्ता अपनाया है और ऐसे हथियार बना रहे हैं जो दुनिया को कई बार नष्ट कर सकते हैं। दूसरे विश्व युद्ध में जापान के विरुद्ध अमरीका के परमाणु बम विस्फोटों के इस्तेमाल करने और इस के नतीजा में भयंकर तबाही देख लेने का बावजूद अमरीका सहित कई दुनिया के कई देश बिना सोचे समझे पहले से कहीं अधिक एटमी बम बनाने में लगे हुए हैं। और अत्याधिक भयंकर परिणाम की तरफ बढ़ रहे हैं। उन 9 देशों में, जिन्होंने परमाणु बम बना लिए हैं, पाकिस्तान ही एकमात्र मुस्लिम देश है। इसलिए, यह नहीं कहा जा सकता है कि मुस्लिम दुनिया इन ख़तरनाक हथियारों का केंद्र है, जिस से मनुष्यों के अस्तित्व को एक बड़ा खतरा है। इसके अलावा, जैसा कि पहले बताया गया है, मुस्लिम दुनिया में अधिकांश हथियार वे हैं जो ग़ैर-मुस्लिम दुनिया में बने हैं। आपने आप यह सवाल होता है कि एक तरफ तो ग़ैर-मुस्लिम क़ौमें मुसलमान दुनिया में शांति की मांग करती है और दूसरी ओर, वे ख़ुद उन देशों में जंग की लपटें और अराजकता को जिन की वे ख़ुद निंदा करते हैं और ख़ुद ही हवा भी दे रहे हैं। कभी-कभी कुछ सरकारों और संस्थानों की तरफ से सकारात्मक कदम उठाए जाते हैं, जिनमें सुधार करने की शक्ति होती है, लेकिन अफसोस होता है कि ऐसे राजनेता समाप्त होते जा रहे हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: पिछले सत्तर वर्षों से अधिक समय में शांति की स्थापना के लिए प्रयासों के बजाय धमकी की नीति अपनाई गई है, जिसके अधीन शांति की स्थापना के लिए पहले से बढ़कर ख़तरनाक हथियार तैयार किए चले गए हैं। दावे जो भी किए जाते हैं, परन्तु यह सच है कि ऐसे उपायों के द्वारा लंबे समय तक अमन की स्थापना नहीं की जा सकती। यह संभव है कि किसी दिन कोई बटन दबा दे और दुनिया को किसी एसी आपदा का सामना करना पड़े जिस को पहले इस ने कभी नहीं देखी हो। अत: शांति की स्थापना के लिए इस तथाकथित मार्ग को अपनाने की बजाय हम अहमदी मुसलमान मानते हैं कि शांति की स्थापना के लिए अब एक ही रास्ता

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 2 Thursday 14 December 2017 Issue No. 50

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 300/- Per Issue: Rs. 6/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

है और वह अल्लाह की ओर आने का रास्ता है। अब वह समय आ चुका है इंसान अपने निर्माता को पहचाने और यह स्वीकार करे कि ईश्वर ही सारे संसारों का रब्ब है, जो हमारी आपूर्ति के सामान प्रदान करता है और हमारा निर्माता है। उस के हम पर बहुत उपकार हैं क्या इस के बदले में हमारा कर्तव्य नहीं है कि हम उस के आगे झुकें और उसे करीब लाने की कोशिश करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जब तक दुनिया की प्राथमकिता भौतिक सामग्री धन और शक्ति होगी हम कभी भी दुनिया में सच्ची शांति नहीं देख सकते। यक़ीनन यही वह लालच है जो अपने लाभ के लिए दूसरों के अधिकार छीन लेने के लिए उकसाती है जिस से फिर अराजकता पैदा होती है जो पूरे विश्व में फैलती है। वर्तमान में ही में एक बड़े अमेरिकी राजनीतिज्ञ ने कहा कि आइ.एस का शाम से पूरी तरह से सफाया कभी भी अमेरिका के हित में नहीं होगा बल्कि इस आतंकवादी समूह की इस क्षेत्र में थोड़ी बहुत उपस्थिति पश्चिम के हित में है। इस तरह के तर्क एक जागरूक चेतना और शांति वाला इंसान कभी नहीं समझ सकता।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: एक तरफ तो पश्चिमी क़ौंमें मुस्लिम देशों से मांग करती है कि सभी प्रकार के आतंकवाद को समाप्त किया जाए और शांति धारण की जाए लेकिन दूसरी ओर उनमें कुछ ऐसे तत्व हैं जो इस बात से डरते हैं वे मुस्लिम दुनिया में शांति के कारण उन की शक्ति और वर्चस्व कम हो जाएगी। ऐसा पाखंड और जटिल नीति केवल विश्व को अस्थिर कर सकती है इसके अलावा, जैसा कि मैंने कहा, पश्चिमी दुनिया और हथियारों के उत्पादकों के निजी हित हैं, जिसके कारण वे लंबे समय तक कुछ मुस्लिम देशों में रहना चाहते हैं। ऐसी नीतियां और स्वार्थपूर्ण निर्णय अफसोस वाले हैं और यह दुनिया की शांति को नष्ट करने वाले हैं। इसके विपरीत, इस्लामिक शिक्षाएं समाज के सभी स्तरों में शांति स्थापित करने की कोशिश करती हैं और हमारे धर्म ने यह स्पष्ट कर दिया है कि वास्तविक न्याय ही शांति की कुंजी है। समानता के बिना शांति स्थापित नहीं की जा सकती। इस्लाम कहता है कि किसी भी देश या व्यक्ति को हमेशा न्याय और सच्चाई बनाए रखने के लिए स्वयं के ख़िलाफ गवाही देने के लिए तैयार रहना चाहिए। इसलिए शांति स्थापित नहीं की जा सकती, न ही घर के स्तर पर, न कस्बा के स्तर पर, न कि शहर के स्तर पर, न ही देश की सतह पर, और न ही वैश्विक स्तर पर जब तक न्याय स्थापित न हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जो लोग इस्लाम पर आरोप लगाते हैं कि इस्लाम के आरम्भ में युद्ध क्यों लड़े गए उसके संबंधित मैं संक्षिप्त विवरण देता हूँ कि कुरआन मजीद की सूर: हज आयत 40 और 41 में वर्णन है कि अल्लाह तआला ने प्रारंभिक मुसलमानों को केवल प्रतिरक्षा से लड़ने की इजाज़त दी हालांकि, ये आयतें स्पष्ट करती हैं कि इस अनुमति को प्रदेशों पर कब्ज़ा करने की अनुमति नहीं है, लेकिन अल्लाह तआला ने इस अनुमति को भ्रष्टाचार और उत्पीड़न को ख़त्म करने की अनुमति दी है, और हमेशा के लिए आस्था की स्वतंत्रता का सार्वभौमिक सिद्धांत स्थापित किया जाए। अत: आयत नम्बर 41 में मुसलमानों को युद्ध की रक्षा के लिए अनुमति देने से पहले, यह आदेश दिया गया था कि वे सभी धर्मों की इबादत के स्थलों, चर्चों, मंदिरों और उपासना के स्थल की रक्षा करते हैं। इसके अलावा, सूरत अल-बकर: की आयत 124 से यह स्पष्ट है कि जहां प्रतिरक्षा के लिए युद्ध की इजाज़त दी गई है, वहां यह बात भी लक्ष्य है कि इसका उद्देश्य हमेशा उत्पीड़न को समाप्त करना है। जब ये शर्तें पूरी हो जाएंगी और लोग शांतिपूर्वक रहने लगेंगे तो फिर शीघ्र बंद कर दी जाए। इस आयत में आगे कहा गया है कि युद्ध के दौरान केवल आक्रमणकारियों को ही निशाना बनाया जाए या कैदी बनाया जाए और निर्दोषों की सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए। युद्ध के दौरान, शेष संपत्ति और चीज़ों को छोड़ने के लिए कोई स्थान नहीं है, जैसे कि हम आज के युद्धों में हम देखते हैं। इस्लाम में जहां भी ताकत के प्रयोग की आज्ञा दी गई है वह केवल अत्याचारी के हाथों को रोकने के लिए और कभी भी कोई क्षेत्र जीतने या या हमला करने की अनुमति नहीं दी गई है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इस्लाम दूसरों को भड़काने और उपद्रव पर उकसाने को बहुत गंभीरता से देखता है। यही कारण है कि कुरआन मजीद में आया है कि फसाद और अराजकता जो लोगों और कौंमों में नफरतों को बीज पैदा करे वे कत्ल से भी बड़ा जुर्म है। तथ्य यह है कि इस्लामी शिक्षाएं लोगों के बीच अंतर को दूर करती हैं और समाज को प्रेम, मुहब्बत और शांति की छाया के तले इकट्ठा करती हैं।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि सच्चा मुसलमान वह जिस के हाथों और ज़बान से दूसरे सुरक्षित हों। बिना कारण किसी को चोट या किसी को कष्ट पहुंचाना चाहे वह कितना ही थोड़ा क्यों न हो गुनाह है और इस्लामी शिक्षा के विरुद्ध है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ने फरमाया: अंत में फिर से इस बात दुहराओंगा कि इस्लाम की शिक्षाएं पूरी तरह से शांतिपूर्ण हैं और जीवन के सभी क्षेत्रों से संबंधित लोगों को सुरक्षा का माध्यम हैं। सच्चे इस्लाम से डरने की हरगिज़ ज़रूरत नहीं है। मुझे आशा है कि आप मेरे साथ सहमत होंगे कि जो लोग इस्लाम को कटटरता और असहिष्णु धर्म के रूप में प्रस्तुत करते हैं वह ख़ुद एक बहुत बड़ें अन्याय को करते हैं। इन शब्दों के साथ मैं आपका धन्यवाद करता हूं कि आप समय निकाल कर हमारे वार्षिक जलसा में शामिल हुए और मेरी बातों को सुना। अल्लाह तआला आप पर अपना फज़ल नाज़िल करे। आमीन।

अन्त में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: हमारी परंपरा के अनुसार, हम कार्यक्रम के अंत में दुआ करते हैं। अब मैं दुआ करूंगा, जो लोग मुझसे जुड़ना चाहते हैं शामिल हो जाएं या अपने तरीके से दुआ करना चाहते हैं। दुआ कर लें।

(शेष.....)

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيلِ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ
(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/ मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad